दिसम्बर 2005
Rs. 12 /-

चन्दामामा

बारीकियों में ही ईश्वर का निवास है

और बारीकियों की विविधता स्वयं ईश्वर के विभिन्न रूपों से कम नही

तामिल वास्तुकला तामिल सभ्यता के रहस्यों को खोलता है। और असल में हज़ारों देवी देवताओं और उतने ही विभिन्न प्रकार की द्राविड़-शैलियों में नज़र आती है तामिल नाडु की प्राचीन आत्मा। पर इस सब को अनुभव करने के लिये आपको पहले यहाँ आना होगा... और यात्रा की बारीकियाँ आप हम पर छोड़ दीजिये।

enchanting tamil nadu

experience yourself

DIPR/1607/DIS/2005/ELEGANT

सम्पर्क: तामिल नाडु टूरिज़म, तामिल नाडु टूरिज़म कॉम्प्लेक्स, वालाजा रोड, चेन्नई - 600 002. भारत। फोन: 91-44-2538 3333, 2538 9857, 2538 4444
फैक्स: 91-44-2536 1385 ई-मेल: ttdc@vsnl.com वेबसाइट: tamilnadutourism.org ऑनलाइन बुकिंग के लिये ttdconline.com पर लॉगऑन कीजिए।

Sharad

सद्भावपूर्ण जीवन-यापन

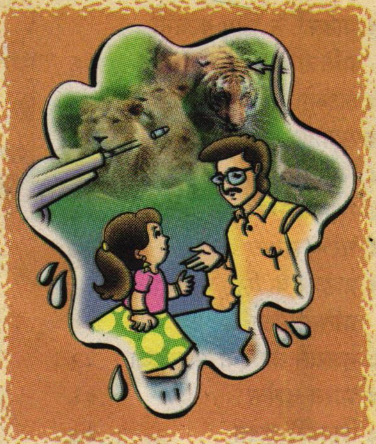

''पिता जी, आज हमें सोहन चिड़िया के बारे में बताया गया,'' वीना कहती है। ''हमारी अध्यापिका ने कहा कि यह बहुत ही दुर्लभ पक्षी है। पूरे भारत में शायद केवल चार या पाँच बच रहे होंगे!''

''हाँ, वीना'', पिता ने कहा। ''क्या यह दुख की बात नहीं है कि अन्धाधुन्ध शिकार-चोरी ने सब साफ कर दिया? बचे हुए पक्षियों को राजस्थान के मरुभूमि राष्ट्रीय पार्क में देखा जाता है।''

''केवल सोहन चिड़िया ही अकेला उदाहरण नहीं है, वीना'', उसके पिता आगे बताते हैं। ''चौसींगा मृग तो लगभग लुप्त ही हो गया है, शिकार-चोरों की मेहरबानी से। जहाँ तक बाघों का प्रश्न है, सन् १९६० के आंकडों के अनुसार ३,००० से अधिक बाघ विजय-स्मारक के शिकारियों द्वारा मौत के घाट उतार दिये गये होंगे। एशियाई सिंहों की आबादी मात्र ३०० रह गई है और वे गिर अभयारण्य में ही सीमित हैं। भारतीय चीता, जो कभी भारत में सर्वत्र पाया जाता था, अब पूरी तरह गायब हो गया। लद्दाख के उच्चतम क्षेत्रों की बर्फीली ठण्ड में रहनेवाले तिब्बती मृग भी मानव की लिप्सा से बच नहीं पाते – प्रत्येक वर्ष २० हज़ार से अधिक पशु रोमचर्म के लिए कत्ल कर दिये जाते हैं, जिससे उत्कृष्ट शहतूश शॉल बनाये जाते हैं।''

''आह! यह कितना निर्मम है! क्या हमलोग कुछ कर सकते हैं, पिता जी?'' वीना पूछती है।

''पहले तुम्हें इस बात के प्रति सजग होना चाहिये, वीना, कि अभी हो क्या रहा है।'' उसके पिता बनाते हैं। ''पशुओं के उत्पाद जैसे व्याघ्र चर्म, हाथी के दाँत से बनी वस्तुएँ तथा शहतूश शॉल इन पर कानूनी प्रतिबन्ध के बावजूद गुप्त रूप से निरन्तर बिकते रहते हैं। यदि तुम इन उत्पादों को खरीदने से इनकार कर दो तो अप्रत्यक्ष रूप से तुम शिकार-चोरी को बन्द कर दोगी। याद रखो, धरती पशुओं का भी वैसे ही निवास-स्थल है जैसे हमलोगों का। उन्हें भी, जिन्दा रहने का हक है।''

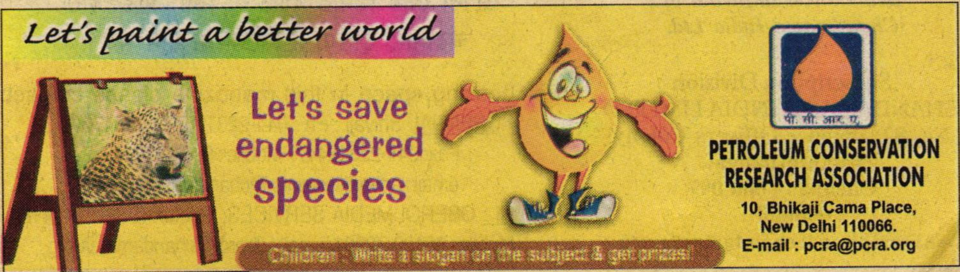

चन्दामामा सम्पुट - ५६ दिसम्बर २००५ सञ्चिका - १२

अंतरंग

- ✻ पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (अप्रैल'०५) ...०६
- ✻ लक्ष्मीपति का भाग्य ...०७
- ✻ मज़ाक ...०९
- ✻ निर्णय स्वयं लें ...१०
- ✻ समाचार-झलक ...२६
- ✻ घर से लगाव ...२७
- ✻ पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता ...३१
- ✻ गुजरात की एक लोककथा ...३२
- ✻ भारत दर्शक ...३६
- ✻ शिकारी कुत्ता ...३७
- ✻ जातक कथा ...३८
- ✻ मांत्रिक की ज़िन्दगी ...४१
- ✻ बुद्धिमत्ता ...५१
- ✻ भारत की सांस्कृतिक घटनाएँ ...५५
- ✻ विविध संस्कृतियों की कहानियाँ ...५६
- ✻ आर्य ...६०
- ✻ आप के पन्ने ...६४
- ✻ चित्र शीर्षक स्पर्धा ...६६

विशेष आकर्षण

भयंकर घाटी-४ ... १३

धर्म सिंहासन (वेताल कथाएँ) ...१९

अन्य देशों की अनुश्रुत कथाएँ ...२४

विष्णु पुराण - २४ ...४५

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

For booking space in this magazine please contact:
CHENNAI Shivaji : Ph : 044-22313637 / 22347399
Fax: 044-22312447, Mobile : 98412-77347
email : advertisements @chandamama.org
DELHI : OBEROI MEDIA SERVICES, Telefax (011) 22424184
Mobile : 98100-72961, email : oberoi@chandamama.org

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

भविष्य का सामना धैर्य के साथ

भारत हमेशा शेष दुनिया के लिए एक शान्तिप्रिय राष्ट्र रहा है। दुर्भाग्यवश पिछले एक वर्ष में हमारे देश को प्राकृतिक आपदाओं के अतिरिक्त, बाहरी और आन्तरिक शक्तियों के आक्रमण का सामना करना पड़ा।

महाराष्ट्र और गुजरात में अभूतपूर्व जलप्लावन देखा गया। प.बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्र, कर्नाटक तथा तमिलनाडु में बाढ़ से जान-माल का बहुत नुक़सान हुआ। साल के अन्त में जम्मू और कश्मीर के भूकम्प में हज़ारों जानें चली गईं। जब लोग दीवाली में खुशियाँ मनाने की तैयारी कर रहे थे, राजधानी दिल्ली बम-विस्फोटों से दहल गई, जो, विश्वास किया जाता है कि बर्बर कट्टरपंथियों के कायरतापूर्ण कारनामे थे। हमें आश्चर्य करना पड़ता है कि क्या हमारा देश सचमुच ऐसे दण्ड का हकदार है।

आप की पत्रिका पाठकों को हमेशा याद दिलाती रही है कि कैसे मनुष्य पर्यावरण-प्रणाली को स्वयं असंतुलित कर देता है और प्रकृति को प्रतिक्रिया करने के लिए भड़का देता है। जहाँ तक निर्दोष व्यक्तियों के प्रति कुछ दलों के अमानवीय कुकर्मों का प्रश्न है, हम केवल मानवीय मूल्यों के पतन को ही दोष दे सकते हैं। हम फिर से कहते हैं कि यह वर्तमान में पल रही पीढ़ी का ही कर्तव्य है कि वह प्राचीन मानवीय मूल्यों को ऊपर उठा कर सुधारात्मक कदम उठाये। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि मनुष्य और उसकी मनोवृति में परिवर्तन लाने की ज़रूरत है।

चन्दामामा आपदाओं के शिकार सन्तप्त लोगों के प्रति समवेदना व्यक्त करता है और आशा करता है कि नया वर्ष, भविष्य का सामना करने के लिए आवश्यक सान्त्वना और धैर्य के उपहार के साथ, प्रवेश करेगा।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.org

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (अप्रैल '०५)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

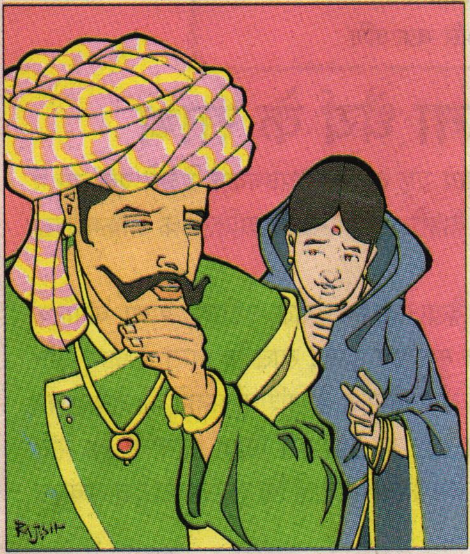

संतरी की खोज

ज़मीन्दार ने उत्तर दिया, ''जिस रात वीर को खजाने के पहरे पर खड़ा किया गया था, उस रात उसने पहरेदारी नहीं की, बल्कि वह तो सारी रात सोया रहा। उसके विपरीत वसन्त अपनी ड्यूटीवाली रात जागता रहा और खजाने की निगरानी की।''

ज़मीन्दार की पत्नी ने कहा, ''यह बात आप इतने दावे के साथ कैसे कह सकते हैं? आप तो रात को उन्हें देखने भी नहीं गए थे?''

ज़मीन्दार ने रहस्य से परदा उठाते हुए कहा, ''मैंने वीर और वसन्त दोनों को रात में पहरेदारी करने के बाद सुबह में अपने बाग में काम करने को कहा था। वीर बाग में परिश्रमपूर्वक काम कर रहा था। पर रात भर जागने के बाद कोई इस तरह काम नहीं कर सकता। जबकि वसन्त बाग में सो रहा था। इसका मतलब यह हुआ कि उसने रात भर जाग कर पहरेदारी की थी।''

ज़मीन्दार ने आगे कहा, ''खजाने की रखवाली के लिए मुझे ऐसे नवयुवक की तलाश थी जो रात भर जाग सके और ईमानदारी से खजाने की निगरानी करे। किसने रात भर जाग कर खजाने की पहरेदारी की,...यही जानने के लिए उन दोनों को अगली सुबह बाग में काम करने के लिए लगा दिया था। वसन्त मेरी कसौटी पर बिलकुल खरा उतरा है।''

ज़मीन्दार के सूझ-बूझ भरे निर्णय से उसकी पत्नी मुग्ध हो गई।

प्रेम मूर्ति

C/o. श्री रामानन्द सिंह, आजाद कॉलोनी, मिरचाई बाड़ी,

कटिहार, बिहार-८५४ १०५.

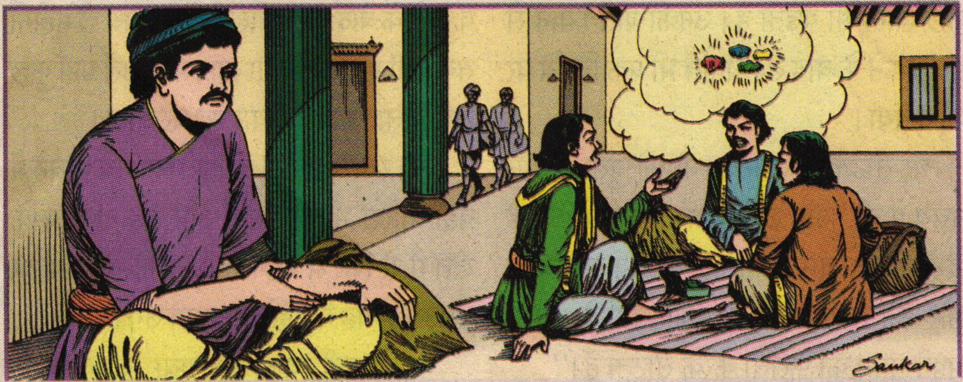

लक्ष्मीपति का भाग्य

लखनपुर नामक गाँव में लक्ष्मीपति नामक एक किसान रहा करता था। पत्नी और पंद्रह साल की बेटी मात्र उसके परिवार के सदस्य थे। दादा और पिता की छोड़ी जायदाद पाँच एकड़ की उपजाऊ भूमि मात्र उसकी संपत्ति थी। पास ही के पहाड़ी प्रांत से एक नहर उसके खेत से होती हुई गुज़रती थी। इधर तीन-चार सालों से बारिश ठीक से हो नहीं रही थी, इसलिए नहर लगभग सूख-सी गयी।

नहर जब पानी से भरी होती थी,तब और ग्रामीणों के साथ-साथ लक्ष्मीपति भी अपने खेत में फसल उगाता था और अपनी ज़रूरतें पूरी करता था। अब पानी की कमी पड़ गयी, इसलिए गाँव के बहुत से लोग कहीं मज़दूरी करके जीविका कमाने गाँव छोड़कर जाने लगे।

परंतु, लक्ष्मीपति हमेशा उन्हीं हीरे जवाहरातों के बारे में सोचने लगा, जिनके बारे में उसने सुन रखा था कि वे दंडकारण्य में उपलब्ध होते हैं। पिछले महीने, जब वह घर की आवश्यक चीज़ें ख़रीदने शहर गया, तब वह एक सराय में ठहरा।

उस समय वहाँ ठहरे कुछ मुसाफ़िर इन्हीं हीरे जवाहरातों के बारे में आपस में बातें करने लगे तो उसने उनकी बातें ध्यान से सुनीं।

मुसाफ़िरों में से एक लंबी सांस खींचता हुआ कहने लगा, ''कुछ भी हो, भाग्य को भी साथ देना चाहिए। हाल ही में दूर के मेरे तीन रिश्तेदार उस प्रदेश में गये तो उनमें से एक ही को ये हीरे जवाहरात मिले। बाकी दोनों अस्वस्थ हो गये और घर लौट आये।''

एक और मुसाफ़िर ने क़हा, ''किसी को जानना हो कि भाग्यवान हूँ या नहीं तो उसे घर छोड़कर जाने का साहस करना चाहिये।''

बाकी मुसाफ़िरों ने भी उसका समर्थन किया। उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा कि कुछ पाना हो तो

शंभु दास

कुछ खोना भी पड़ता है। उनकी बातें ध्यान से सुन चुकने के बाद लक्ष्मीपति भी एक निर्णय पर पहुँच गया।

घर लौटते ही उसने पत्नी को बुलाया और सराय में जो हुआ, उसे खुलासा बताया, ''थोड़े दिनों के लिए तुम अपने भाई के गाँव चले जाना और वहीं रहना। उन हीरे जवाहरातों के बारे में अपने भाग्य का फ़ैसला करके लौटता हूँ।''

लक्ष्मीपति की पत्नी अच्छी तरह से जानती थी कि उसका पति कितना हठी है, इसलिए पति से बताये बिना उसने अपने भाई को खबर भेजी। साले ने लक्ष्मीपति को समझाते हुए कहा, ''बहनोई जी, आप का निर्णय बिल्कुल सही नहीं है। दुराशा कष्ट पहुँचाती है। दंडकारण्य जाने का विचार छोड़ दीजिये। इधर तीन चार सालों से वर्षा नहीं हुई, इसका यह मतलब नहीं कि इस साल भी वर्षा नहीं होगी। आप निराश न होइये।''

फिर भी, लक्ष्मीपति ने साले की बातें अनसुनी कर दीं और दंडकारण्य जाने निकल पडा। वहाँ पहुँचने के बाद कुछ और लोगों के साथ छे महीनों तक इसी प्रयास में लगा रहा। परंतु उसे वहाँ कुछ नहीं मिला। बीमार होकर वह घर लौटा।

उसे स्वस्थ होने में दो हफ्ते लग गये। इतने में वहाँ बारिश भी होने लगी और वह नहर उसके खेत में से फिर से बहने लगी। छोटे-छोटे पत्थर भी उस प्रवाह में बहते हुए आने लगे।

नहर में पानी ज्यादा होता गया, जिसके कारण लक्ष्मीपति के खेत में भी पानी घुटनों तक भर गया। इतने गहरे पानी में हल जोतना संभव नहीं, इसलिए उसने खेत के बाँध को तोड़ दिया। खेत में आ रहे पत्थरों को वह निकालकर बाहर फेंकने लगा। तब उसने अचानक देखा कि एक जगह पर तितर-बितर पड़े पत्थरों में से दो पत्थर चमक रहे हैं। उन दोनों पत्थरों को लेकर वह घर गया और उन्हें अपने साले को दिखाया। थोड़ी देर तक उन्हें तीक्ष्ण दृष्टि से देखने के बाद उसने कहा, ''ये कच्चे हीरे हैं। देखा बहनोई जी, कहीं और नहीं, तुम्हारा भाग्य तुम्हारे खेत में ही है।''

मज़ाक

चारुलता और हेमलता अड़ोस-पड़ोस में रहती हैं। दोनों अधेड़ उम्र की हैं। शिक्षित भी हैं। उनके पति कुशल व दक्ष हैं, इसलिए व्यापार करते हुए खूब कमा रहे हैं।

जब उनके पति अपने-अपने काम पर चले जाते हैं, तब वे जल्दी-जल्दी अपने घर के काम निबटाने में जुट जाती हैं। घर के काम पूरा होते ही, दोनों औरतें, किसी न किसी के चबूतरे पर बैठ जाती हैं और गपशप करती रहती हैं। देखने में वे दोनों बहुत गहरे दोस्त लगती हैं, पर एक-दूसरे का मज़ाक उड़ाने का मौक़ा ढूँढ़ती रहती हैं।

एक दिन शाम को आराम से बैठकर बातें करते समय, अपने पति के बारे में बोलती हुई चारुलता ने कहा, ''इधर कुछ समय से मेरे पति मेरे प्रति पहले की तरह प्रेम नहीं दिखा रहे हैं, मेरा आदर नहीं कर रहे हैं।''

हेमलता ने मन ही मन सोचा कि इसे चिढ़ाने का यह अच्छा मौका है। इसलिए उसने कुछ सोचते हुए कहा, ''क्या ऐसी बात है? किन्तु देखा, मेरे पति का बर्ताव। तुम्हारे पति के बर्ताव के बिलकुल विरुद्ध। पहले से भी ज्यादा वे मेरे प्रति और प्रेम दिखा रहे हैं, मेरा आदर कर रहे हैं। आये दिन कुछ न कुछ मेरे लिए भेंट ला रहे हैं।''

यह सुनते ही चारुलता ने तपाक से कहा, ''हाँ, हाँ, क्यों नहीं। तुम्हारे पति पुरावस्तुओं के व्यापारी जो ठहरे।''

इस पर हेमलता को कोई जवाब देते न बना।

-शांतलक्ष्मी

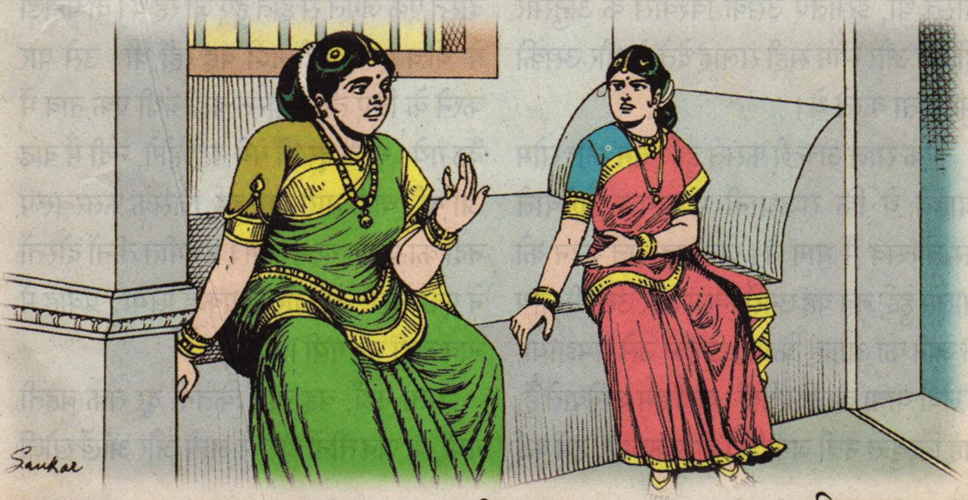

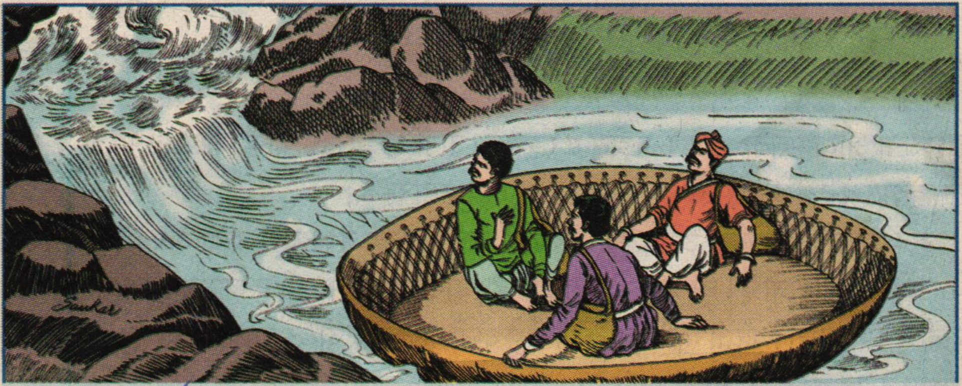

निर्णय स्वयं लें

लक्ष्मीपुरी नामक एक छोटे गाँव में राम, सोम, करन नामक तीन दोस्त रहा करते थे। वे तीनों किसान थे। इनमें से राम और सोम अक़्लमंद थे। करन उनकी सलाह लिये बिना छोटा-सा भी काम करता नहीं था। चाहे वह खेत से संबंधित हो, या घर से, मित्रों से सलाह लिये बिना किसी निर्णय पर आता नहीं था। चूँकि करन बचपन से ही दोस्त था, इसलिए उसके विश्वास के अनुसार ही राम और सोम सही सलाह देते थे और उसकी सहायता करते थे।

एक साल अच्छी फसल हुई। राम और सोम चाहते थे कि राजधानी में संपन्न होनेवाले वसंतोत्सव में भाग लें। जब यह बात करन को मालूम हुई, तब वह उनसे मिला और उसे भी साथ ले जाने का आग्रह किया। उन्होंने उसे समझाया, ''लंबी यात्रा करनी पडेगी। जहाँ हम जानेवाले हैं, वह बिल्कुल नयी जगह है। हो सकता है, हमें कई अप्रत्याशित तकलीफ़ों का सामना करना पडे। तुमसे ये सहे नहीं जायेंगे।'' मित्रों ने उसे यों बहुत समझाया, पर वह टस से मस न हुआ। उसने दृढ़ स्वर में कहा, ''जब तुम दोनों साथ हो, मुझे डर किस बात का? मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा।'' इसके दूसरे दिन तीनों राजधानी जाने निकल पड़े।

तीन दिनों की लगातार यात्रा के बाद तीनों दोस्त एक जंगल से होते हुए जा रहे थे। दो पहाडों के बीच एक छोटी नदी वह रही थी। उसे पार करने के लिए तीनों दोस्त वहाँ बंधी एक नाव में बैठ गये। थोड़ी दूर भी गये नहीं होंगे, नदी में बाढ़ आ गई। कहीं भारी वर्षा हुई, जिसके फलस्वरूप नदी का प्रवाह बढ़ने लगा। भयभीत तीनों दोस्तों ने एक-दूसरे को ज़ोर से पकड़ लिया। प्रवाह में नाव कहीं बह गयी।

पता नहीं, वह नाव कितनी दूर तक बहती गयी, पर जब तीनों होश में आये और आँखें खोलीं

शांता आप्टे

तो उन्होंने अपने को एक द्वीप में पाया। उन्हें बड़ी भूख लगने लगी, पर कहीं जाने की ताक़त उनमें नहीं रही। अचानक राम ने पास ही आम का एक पेड़ देखा, जिसमें आम लटक रहे थे।

राम आम को तोड़ने ही वाला था, यह कहते हुए एक भूत पेड़ पर से नीचे कूद पड़ा, ''मेरी इज़ाज़त के बिना आम कौन तोड़ रहा है?''

भूत को देखते ही तीनों दोस्त घबरा गये। भय के मारे वे नदी में कूदने ही वाले थे कि भूत ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''डरो मत। इधर आओ। मैं तुम्हें हानि नहीं पहुँचाऊँगा।''

डरते हुए तीनों भूत के पास आये। भूत ने उनसे पूछा, ''तुम लोग इस द्वीप में कैसे आये?'' जो हुआ, तीनों ने बताया। उनकी हालत पर दया दिखाते हुए उसने आम के फल उन्हें दिये। भूख मिट जाने के बाद तीनों ने उसे कृतज्ञता जतायी। उनके भोलेपन पर खुश होकर भूत ने कहा, ''तुम यहाँ से पैदल कहीं भी नहीं जा पाओगे। इसलिए तुममें से हर एक को एक एक वरदान देता हूँ। परंतु एक शर्त पर। तीनों को एक समान वरदान माँगना नहीं चाहिये। माँगो, क्या चाहते हो?''

''मुझे मेरी पत्नी और मेरी संतान के पास पहुँचाना,'' राम ने माँगा। दूसरे ही क्षण वह घर पहुँच गया।

''वसंतोत्सव में भाग लेने निकला हूँ। मुझे राजधानी पहुँचाना,'' सोम ने माँगा। भूत ने तुरंत उसे राजधानी पहुँचा दिया।

अब माँगने की करन की बारी थी। वर क्या माँगू, वह निर्णय नहीं कर सका। वे दोनों अपना-अपना वरदान माँगकर चले गये। वह पेशोपेश में

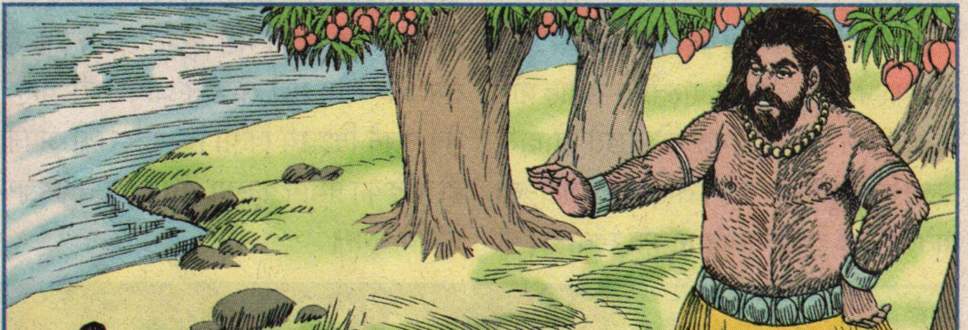

पड़ गया कि वर माँगू तो क्या वर माँगू? अचानक उसके दिमाग़ में एक विचार कौंध उठा।

''मेरी समझ में नहीं आता कि क्या वरदान माँगू। इसके लिए मुझे अपने दोस्तों की सलाह चाहिये। इसलिए उन दोनों को यहाँ बुलाना।''

दूसरे ही क्षण भूत ने उन दोनों को वहाँ उपस्थित कर दिया और ग़ायब हो गया। दोनों दोस्त जान गये कि ऐसा क्यों हुआ।

वे करन के इस काम पर बहुत दुखी हुए और करन से कहने लगे, ''इसीलिए हम लोग तुम्हें साथ लाना नहीं चाहते थे। तुम भी भूत से घर जाने का वरदान माँग लेते। क्या तुम्हें इतनी अक्ल भी नहीं थी? सलाह माँगने के लिए हम दोनों को यहाँ बुलाकर मुसीबत में डाल दी! अब यहाँ से कैसे घर पहुँचे।''

थोड़ी ही देर में भूत वहाँ फिर प्रत्यक्ष हुआ और कहने लगा, ''अपने दोस्तों से सलाह माँग ली?'' करन चुप रहा।भूत को देखते ही दोनों दोस्त खुश हुए और कहने लगे, ''हर छोटी-सी बात पर यह हमसे सलाह माँगता रहता है। हर समय सलाह माँगनेवाले इसे हमारे गाँव के बरगद के पेड़ के नीचे की देवी के मंदिर के सामने पहुँचाना। उसी प्रकार, जैसे हमने माँगा, हमें पहुँचा देना। यह सहायता करोगे तो जीवन भर हम तुम्हारे ऋणी रहेंगे।''

भूत हँस पड़ा और करन से बोला, ''सलाहें लेना कोई ग़लत बात नहीं है। किन्तु हमें चाहिये कि हम अपनी अच्छाई-बुराई का निर्णय स्वयं करें। बुद्धिहीन होकर हर किसी निर्णय के लिए दूसरों से सलाहें माँगते रहेंगे तो हम आफ़तों में फंस जायेंगे और उन्हें भी आफ़तों में डाल देंगे।'' फिर उसने उन तीनों को उनकी मनचाही जगहों पर पहुँचा दिया।

करन को अब समझ में आ गया कि हर बात पर दूसरों से सलाह लेने से आदमी हमेशा मूर्ख बना रहता है। मेरी मूर्खता के कारण ही राम और सोम मुझे साथ ले जाना नहीं चाहते थे। उसने निश्चय किया कि अब से मैं अपनी ही बुद्धि का प्रयोग करूँगा और हर बात में स्वयं निर्णय लूँगा।

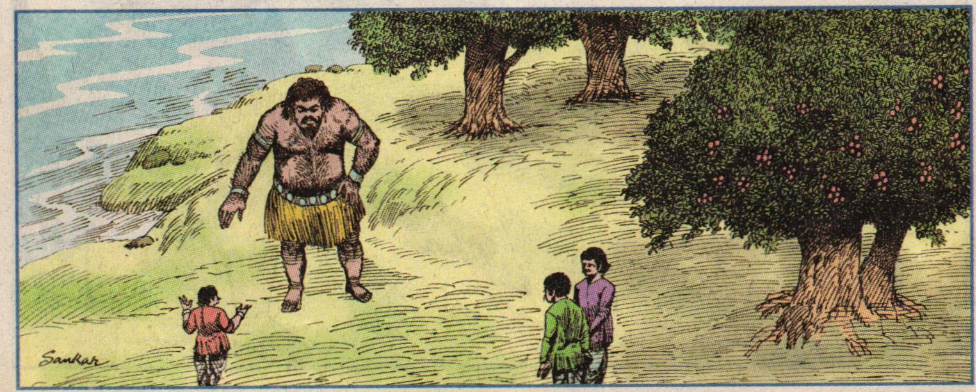

भयंकर घाटी

4

(केशव विचित्र जन्तु पर सवार होकर पहड़ पर भाग गया। वहाँ एस गुफ़ा में एक मान्त्रिक ने कालभैरव की मूर्ति दिखआई, उसकी आँखों में उसने जो शोर शरावा जंगल में हो रहा था, वह भई दिखाया। केशव ने देख कि कोई भयंकर चीज़, जिसका सिर मनुष्य की तरह था और जिसके चमगादड़ से पंख थे राज-सैनिकों को भगा रही थी। उसके बाद–)

उस भीकर आकृति को देखकर, जो राजसैनिकों को डराकर, जंगल में इधर उधर भगा रही थी, केशव के आश्चर्य की सीमा न रही। उसने कभी न सुना था कि ऐसा भी कोई मनुष्य होगा, जिसके चमगादड़ से पंख होंगे या चमगादड़, जिसका मुख मनुष्य की तरह होगा।

परन्तु उसने स्वयं ऐसा विचित्र प्राणी अपनी आँखों देखा था। यह वास्तविकता है, अथवा मान्त्रिक ने अपनी मन्त्रशक्ति से कोई भ्रम पैदा किया है? केशव चकित होकर मन ही मन सोच रहा था।

"वत्स केशव, देखी कालभैरव की शक्ति? अब तुम्हारे पिता पर कोई आपत्ति नहीं आयेगी। राज-सैनिक बिना पीछे देखे ब्रह्मापुर भागे जा रहे हैं। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि तुम्हारी और तुम्हारे पिता की रक्षा का भार मुझ पर है। अब तुम अपने कन्धे पर के कपड़े को हटाओ। सन्देह निवारण कर लो।" मान्त्रिक ने कहा।

मान्त्रिक को क्या देखकर इतनी खुशी हुई थी यह जानने के लिए केशव ने अपना कन्धा आगे करके ध्यान से देखा। वहाँ कोई तिल न था। निशान वगैरह भी न था। केशव ने सोचा, जो वह देख नहीं पा रहा था, सम्भव है, मान्त्रिक ने देख लिया हो।

वह यह सोच ही रहा था कि मान्त्रिक हाथ में कुछ पत्ते मलता, वहाँ आया। ''वत्स,वह तिल तुम्हारी आँखों को नहीं दिखाई देगा। तुम इन पत्तों का रस लगाओ, तब तुम भी अपनी आँखों से देख सकोगे।'' यह कहकर उसने पत्तों का रस केशव के कन्धे पर लगाया।

रस के लगते ही केशव के कन्धे पर काले साँप का चित्र-सा दिखाई दिया। उसको देखकर मान्त्रिक बड़ा खुश हुआ।

''वत्स केशव, अब कोई शक्ति नहीं है जो हमारे वश में न आ सकती हो। कालभैरव, आदिभैरव, उन्मत्तभैरव सब हमारे घर में वास करने जा रहे हैं।'' उसने कहा। ज़ोर से मन्त्र पढ़ते हुए कालभैरव की मूर्ति के सामने उसने साष्टांग किया। देखते देखते वह आराधना करता-करता समाधिस्थ-सा हो गया।

केशव यह देखता वहीं खड़ा रहा कि कब मान्त्रिक आँखें खोलता है। पन्द्रह मिनट गुज़र गये, पर उसमें कोई गति न दिखाई दी। केशव को न मालूम क्यों सहसा भय हुआ। कहीं मान्त्रिक ने मुझे कालभैरव को बलि देने के लिए तो नहीं लाया है? उसका कुछ स्वार्थ अवश्य होगा जिसे सिद्ध

केशव के मन में मान्त्रिक के प्रति कृतज्ञता के भाव उठे। उसने सोचा कि जो भी हो, सैनिक सचमुच भाग रहे थे और वे अब उसके पिता को हानि नहीं पहुँचा पायेंगे। उसने विश्वास कर लिया कि मान्त्रिक ने सचमुच उसके पिता की, राज-सैनिकों से रक्षा की है। अब मान्त्रिक का कहना क्या था कि उसने कन्धे पर से कपड़ा हटा दिया। मान्त्रिक ने केशव के कन्धे को अपलक देखा। ''अहाहा, अहाहा वत्स, तुम भाग्यशाली हो! तुम्हारी बहुत अच्छी जन्मपत्री है। तुम जो चाहोगे, वह होकर रहेगा। तुम महाराजा के लक्षण लेकर पैदा हुए हो।'' उसने केशव की पीठ सहलाई। ''फिर भी क्यों सन्देह रखा जाये? अभी क्यों न तय कर लिया जाये?'' कहता हुआ वह गुफ़ा में से बाहर निकल गया।

करने के लिए वह मेरा उपकार करने का दिखावा कर रहा है और मेरे पिता की सहायता के लिए अपनी मंत्रशक्ति का प्रयोग कर रहा है। यह सन्देह होते ही केशव अपने अस्त्रों को खोजने लगा। तलवार, बाण, गुफ़ा के द्वार पर उसको दिखाई दिये। केशव एक छलांग में वहाँ गया। उसने उनको लेना चाहा। इतने में उसको आवाज़ सुनाई दी। ''ठहरो, केशव, जल्दबाज़ी न दिखाओ।'' केशव ने सिर उठाकर आगे देखा। सामने करीब बीस वर्ष का एक युवक खड़ा दिखाई दिया।

''तुम कौन हो? यहाँ क्यों आये हो?'' केशव ने चकित होकर पूछा।

''मैं ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक का शिष्य हूँ। मैं कहीं से नहीं आया हूँ। मैं यहीं रहता हूँ।'' युवक ने कहा।

''ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक कौन है?'' केशव ने पूछा।

''अरे नादान! तुम इतना भी नहीं जानते।'' कहते हुए युवक ने कालभैरव के सामने साष्टांग पड़े हुए मान्त्रिक को दिखाया।

''जानते हो, यकायक आकाश से तुम्हारे बिजली की तरह गिरने से मैं कितना डर गया था।'' केशव ने तलवार और बाणों को लेते हुए कहा।

''इतना डरना भी तुम छोड़ दो। नहीं तो, तुम आनेवाली आपत्ति का मुकाबला कैसे करोगे?'' युवक ने पूछा।

''आनेवाली आपत्ति क्या है?'' केशव ने

आश्चर्यपूर्वक पूछा। उसे याद आया कि जबसे उसने उस विचित्र प्राणी को देखा है, तबसे वह आफतों में ही फँसता आया है। उसने विचित्र जन्तु के लिए चारों ओर घूमकर देखा। परन्तु वह कहीं दिखाई न दिया।

''क्या देख रहे हो?'' युवक ने पूछा।

''मैं एक विचित्र जन्तु पर सवार होकर यहाँ आया था, मैं यह देख रहा हूँ कि वह कहाँ गया है।'' केशव ने कहा।

युवक ने ज़ोर से हँसकर कहा, ''वह विचित्र जन्तु मैं ही तो हूँ। मैंने बताया तो था कि मैं ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक का शिष्य हूँ। मेरा नाम जयमल्लु है। क्योंकि मेरे कारण ही तुम पर इतनी आपत्तियाँ आई हैं इसलिए मैं भरसक तुम्हारी रक्षा करने का प्रयत्न करूँगा।'' जयमल्लु ने कहा।

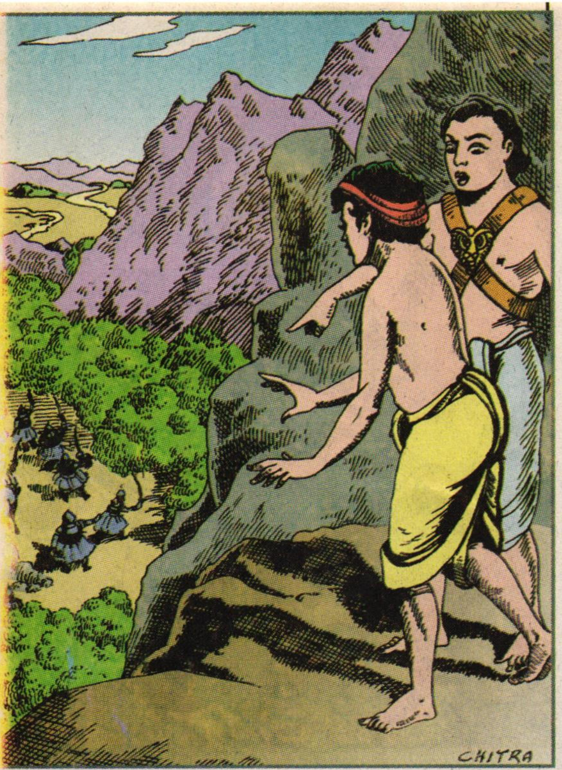

मुझे कौन रोक सकता है?" केशव ने कहा। जयमल्लु मुस्कुराते हुए केशव को कन्धा पकड़कर गुफ़ा के सामने से दूर ले गया। "जो एक बार ब्राह्मदण्डी के हाथ आ जाता है, वह उससे बचकर नहीं निकल पाता। हम उसको बिना मारे यहाँ से नहीं निकल सकते।" उसने केशव को समझाया।

"तो वह काम अभी क्यों न कर दिया जाये? अभी वह मूर्छित है ही, मैं उसको तलवार से मार देता हूँ।" कहता केशव तलवार निकाल कर गुफ़ा की ओर बढ़ा।

जयमल्लु ने केशव का कन्धा पकड़कर रोकते हुए कहा, "जल्दी न करो, जब तक हम दोनों में मेल है, हम उसे कभी भी मार सकते हैं। अब तुम्हें क्या फायदा है, अगर तुम उसे मार भी दोगे? यदि तुम पहाड़ से भाग भी गये, तो सैनिक तुम्हें शत्रु देश का गुप्तचर समझकर पकड़ लेंगे। यह जानते हो न!"

"राज-सैनिकों को, एक भयंकर आकृति ने, जिसका सिर मनुष्य का-सा था और जिसके चमगादड़ से पंख थे, जंगल में से भगा दिया है?" केशव ने कहा।

यह सुन जयमल्लु ज़ोर से हँसा। फिर वह केशव को साथ लेकर, एक ऊँचे प्रदेश की ओर गया और नीचे के प्रदेश की ओर दिखाते हुए उसने कहा, "ज़रा गौर से देखो। कितने सारे सैनिक, तुम्हारे लिए सारा जंगल छान रहे हैं।"

केशव को सब कुछ विचित्र-सा मालूम हुआ। जयमल्लु की बात में कुछ भी झूठ न था। घोड़ों पर

जयमल्लु की बात सुनकर केशव ताड़ गया कि गुरु शिष्य में कुछ अनबन है। उसने गुफ़ा के अन्दर देखा। ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक कालभैरव की मूर्ति के सामने बिना हिले डुले वैसे ही समाधि की अवस्था में पड़ा हुआ था।

"वह ऐसी हालत में है कि हम चाहें कुछ भी बात करें, वह नहीं सुन सकता। वह भक्तिवश मूर्छित है। यदि हम न उठायेंगे, तो सूर्यास्त तक यों ही पड़ा रहेगा।" जयमल्लु ने कहा।

"हूँ, हाँ, तो तुम कह रहे थे कि मुझ पर कोई आपत्ति आनेवाली है, वह कहाँ से और कैसे आनेवाली है, क्या तुम्हें मालूम है?" केशव ने पूछा। जयमल्लु ने बिना कुछ बात किये ब्राह्मदण्डी की ओर संकेत किया।

"तो मैं अभी पहाड़ से उतरकर भाग जाऊँगा।

सवार हो, कई राज-सैनिक पेड़ों पर, झाड़ियों के आसपास खोज रहे थे। "यानी, जो कुछ मान्त्रिक ने कालभैरव की आँखों में दिखाया था, वह सब भ्रम था?" केशव ने अचरज से पूछा।

"नहीं तो और क्या था? मुझे अद्‌भुत प्राणी बनाकर भेजा था, इसी मान्त्रिक ने। तुम्हें आफत में डालकर वह इस पहाड़ पर ले आया। मुझे उसके इस काम में सहायता करनी ही पड़ी, तुम्हारे दायें कन्धे पर कालसर्प के आकार का तिल देखकर वह फूला न समाया। वह तेरे द्वारा उन शक्तियों को पा सकता है, जिनको पाने की वह इतने दिनों से कोशिश कर रहा है। वह इसके लिए तुम्हारा उपयोग करने जा रहा है, जानते हो?" जयमल्ल ने कहा।

"कौन-सी हैं वे शक्तियाँ, जिन्हें प्राप्त करने के लिए मेरा उपयोग करने जा रहा है और उसके लिए वह कैसी परीक्षा लेने जा रहा है?" केशव ने कहा।

जयमल्ल मुस्कुराया। कुछ देर तक केशव की ओर देखता रहा।

फिर उसने उसके दोनों हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "केशव, आज से हम दोनों दोस्त हैं। कोई चीज़ हमारा स्नेह सम्बन्ध नहीं तोड़ सकती। तुम पर और मुझ पर भी इस ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक के कारण आपत्ति आनेवाली है। मगर यदि हम दोनों मिलकर रहें, तो वह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यही नहीं, जिन शक्तियों को वह पाने की कोशिश कर रहा है, हम ही उन

शक्तियों को पा लेंगे। वह तुम्हारा किस प्रकार उपयोग करने जा रहा है, यह बात...''

जयमल्ल अपना वाक्य अभी पूरा न कर पाया था कि जैसे आसमान फट गया और बिजली-सी कड़की। विस्फोट-सा हुआ। फिर ऐसा लगा कि पहाड़ डगमगा रहा है जैसे किश्ती पानी में झकझोर दी गई हो।

इस विस्फोट के कारण बड़े बड़े पत्थर नीचे खिसकने लगे। केशव और जयमल्ल जिन पत्थरों पर खड़े थे, उन्हें छोड़कर भागे। इतने में गुफ़ा के अन्दर से ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक चिल्लाता बाहर आया।

जंगल की ओर देखते हुए उसने कहा, ''हा...हा...हा...कालभैरव की अपार शक्ति! मेरे मन्त्र का प्रभाव! पहाड़ ही हिलता-सा मालूम होता है। चाहूँ, तो मैं इसको आकाश में पक्षी की तरह उड़ा सकता हूँ। आसमान से बिजली गिरा सकता हूँ। जलजला ला सकता हूँ। प्रलय मचा सकता हूँ। यह देखो, वे राज-सैनिक जो पहाड़ पर चढ़ना चाहते थे, कैसे हथेली पर जान रखकर भागे जा रहे हैं। जादू भरे पत्थर यमदूत की तरह उनका पीछा कर रहे हैं। अब वे इस पहाड़ की ओर कभी भूल से भी नहीं देखेंगे। हाः हाः हाः!''

केशव और जयमल्ल ने पहाड़ की तलहटी में देखा। जैसा मान्त्रिक ने कहा था, राज-सैनिक घोड़ों पर सवार हो, और कुछ पैदल पहाड़ से भाग रहे थे और बड़े बड़े पत्थर इस तरह मैदान की ओर लुढ़क रहे थे जैसे कोई भयंकर भूकम्प आ गया हो। उसकी चोट से कुछ घुड़सवार और कुछ पदाति पिस कर मौत के मुँह में जा रहे थे और कुछ गिर कर, चट्टान के नीचे दब कर आर्त पुकार कर रहे थे।

केशव कुछ समय तक स्तब्ध-सा खड़ा रहा। वह भयंकर दृश्य देखकर सम्भला ही था कि ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक ने अट्टहास किया, ''शिष्य, अपने केशव को दागोंवाले शेर की गुफ़ा के सामनेवाले हाथियों के तालाब में स्नान कराकर लाओ। सूर्यास्त के बाद बहुत-से ऐसे काम हैं, जो हमें करने हैं।'' उसने कहा।

(और है)

धर्म सिंहासन

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन, तुम्हारे इस कठोर परिश्रम को देखते हुए लगता है कि तुम राजा नहीं हो बल्कि एक साधारण नौकर हो। राजा को तो चाहिये कि वह सुचारु रूप से शासन चलाये, देश की रक्षा करे, प्रजा को सुखी रखे, पर तुम अपना यह कर्तव्य भुलाकर नौकर का काम कर रहे हो, जो तुम्हारे लिए सर्वथा अनुचित है। मैं तो इस बात से अनभिज्ञ हूँ कि तुम्हारी इस कठोर दीक्षा के पीछे क्या रहस्य है। क्या किसी महिमावान वस्तु

को पाने के लिए यह सब कुछ कर रहे हो? समझ लो कि अगर ऐसी महिमावान वस्तु मिल भी गयी तो उसे उपयोग में लाने के लिए पर्याप्त विवेक और तीक्ष्ण दृष्टि की आवश्यकता है। जिस व्यक्ति में ये गुण नहीं होते, वह राजा नवनीतवर्मा की तरह मूर्ख साबित होगा, जिसने महिमावान वस्तु को प्राप्त करने के बाद भी उसे हाथ से फिसल जाने दिया। थकावट दूर करते हुए उस राजा की कहानी सुनो।'' फिर वेताल यों कहने लगाः

प्रणवगिरि के राजकुमार नवनीतवर्मा ने विवेचन शर्मा नामक एक महान पंडित के यहाँ शिक्षा पायी। विद्याभ्यास की समाप्ति के बाद गुरु ने उसे बिदा करते हुए कहा, ''शिष्य, तुमने गुरुकुल में रहकर संपूर्ण विद्या प्राप्त कर ली। कुछ ही दिनों में तुम प्रणवगिरि राज्य के राजा बननेवाले हो। राजा को कितनी ही समस्याओं का समाधान बुद्धिमानी और कौशल के साथ करना पड़ता है। इसके लिए मैं तुम्हें तांबे का बना एक सिंहासन भेंट स्वरूप दे रहा हूँ। यह महिमावान अद्भुत धर्म सिंहासन है। कभी कठिन समस्या का सामना करना पड़े तो इसपर उस व्यक्ति को बिठा दो, जो इस समस्या से संबंधित है। तब इस समस्या का हल आसानी से हो जायेगा। भविष्य में लगे कि तुम्हें इस सिंहासन की ज़रूरत नहीं है तो मुझे लौटा देना,'' यह कहते हुए उन्होंने शिष्य नवनीतवर्मा को आशीर्वाद दिया और साथ ही तांबे का सिंहासन भी।

नवनीतवर्मा सिंहासन सहित राजधानी पहुँचा। थोड़े ही दिनों में उसके पिता ने उसे शासन का भार सौंप दिया। उसने तांबे के सिंहासन को, अपने सिंहासन के बगल में ही रखवाया। सुचारु रूप से वह शासन चलाने लगा और थोड़े ही समय में वह अच्छा राजा कहलाया।

एक दिन सेनाधिपति धीरमल्ल ने, वीरबाहु नामक एक लुटेरे को गिरफ्तार करके राजा नवनीत वर्मा के सम्मुख प्रस्तुत किया। वीरबाहु, इधर दो सालों से राजधानी में धनी नागरिकों को लूटता आ रहा था। वह सैनिकों की पकड़ में नहीं आ रहा था। ऐसा भयंकर लुटेरा पकड़ा गया, इसपर राजा बहुत प्रसन्न हुआ पर सोच में पड़ गया कि उसे कैसा दंड दिया जाए। राजा ने आखिर उसे तांबे के सिंहासन पर बैठने की आज्ञा दी।

वीरबाहु जैसे ही सिंहासन पर बैठा, यह ध्वनि

हुई, ''यह महालुटेरा है। इसे आजीवन जेल में बंद कर दिया जाए।''

इतने में गुप्तचरों का सरदार वहाँ आया, राजा को सविनय प्रणाम किया और कहने लगा, ''महाराज, वीरबाहु ने निस्संदेह कितने ही नागरिकों को लूटा, कितनी ही चोरियाँ कीं, पर यह भी सच है कि उस दौरान उसने कोई हत्या नहीं की। साथ ही, यह भी सच है कि उसने साधारण जनता को नहीं लूटा। उन्हीं प्रमुख संपन्न नागरिकों को इसने लूटा, जिनकी कमाई अनुचित व अन्यायपूर्ण थी। परंतु यह धन-राशि उसने गरीबों में बांटी और उनके दुखों को दूर करने की कोशिश की।'' अपने इस कथन की पुष्टि में एक पत्र भी उसने राजा को समर्पित किया।

पत्र को पूरा पढ़ने के बाद नवनीतवर्मा सोच में पड़ गया। फिर सभासदों की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, ''वीरबाहु को भ्रष्टाचार-निरोध विभाग का प्रधान अधिकारी नियुक्त कर रहा हूँ।''

राजा के निर्णय को सुनकर सबके सब सन्न रह गये। वीरबाहु ने सिर झुकाकर राजा को प्रणाम करते हुए कहा, ''महाराज, मेरी ईमानदारी को पहचानते हुए आपने मुझे जो ज़िम्मेदारी सौंपी, उसके लिए मैं सदैव आपका कृतज्ञ रहूँगा।''

इस घटना के कुछ दिनों के बाद, महाराज के जन्म-दिन के अवसर पर कितने ही मनोरंजन के कार्यक्रम संपन्न हुए और युद्ध विद्याओं में प्रतियोगिताएँ भी चलायी गयीं। मल्लयुद्ध और खड्गयुद्ध के विजेताओं की घोषणा भी हो गयी, पर यह निर्णय नहीं हो पाया कि धनुर्विद्या में विजेता कौन है; क्योंकि इस विद्या में दो युवक

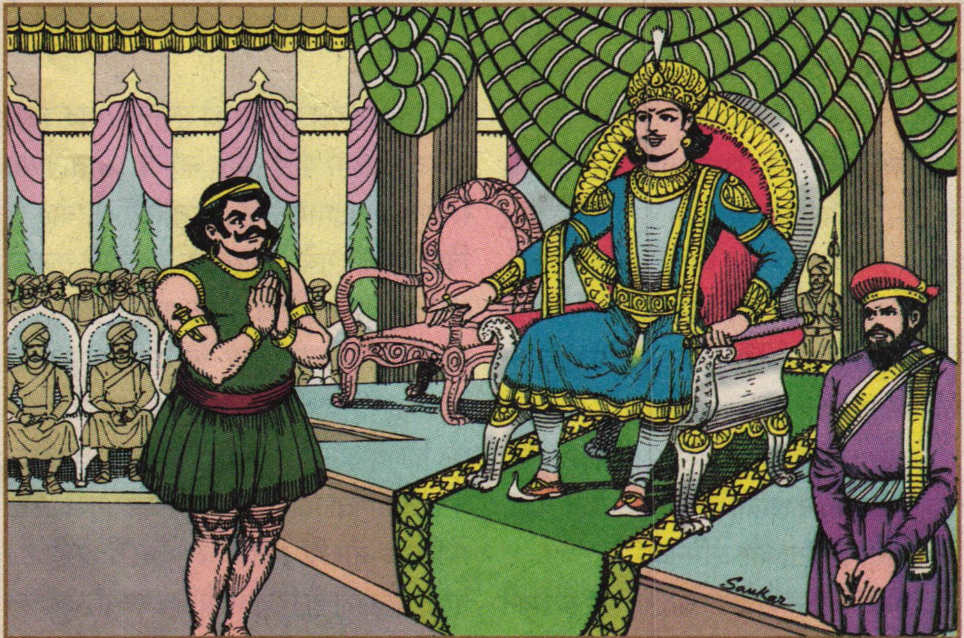

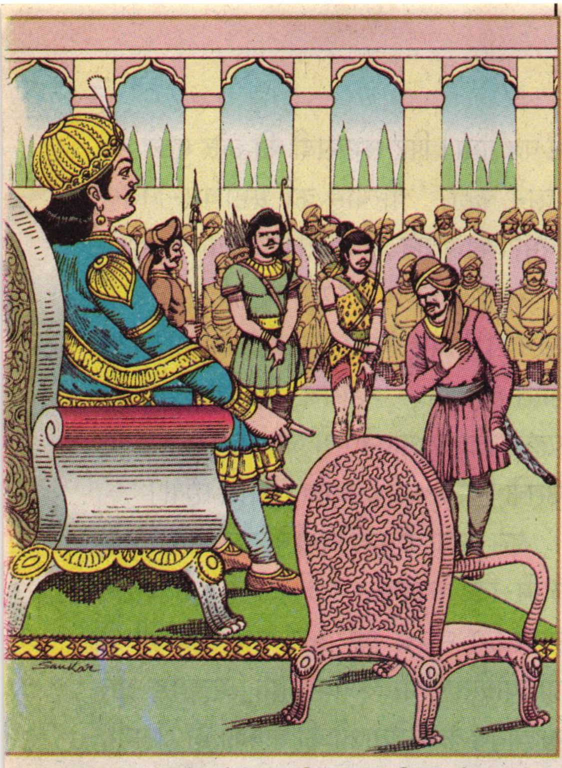

पुरस्कार के योग्य साबित हुए। नियम के अनुसार किसी एक ही को पुरस्कार प्रदान किया जाना चाहिये। सौ गजों की दूरी पर पेड़ की टहनी पर एक गुड़िया लटकायी गयी और दोनों युवकों से कहा गया कि वे उसे अपना निशाना बनाकर बाण छोड़ें। दोनों ने बाण चलाये। इनमें से एक का नाम था, विजय। यह राजा का भानजा था। दूसरे का नाम था, भैरव। यह भील युवक था।

इस प्रतियोगिता में विजेता का निर्णय करने के लिए नवनीतवर्मा ने एक बार और धर्म सिंहासन का आश्रय लिया।

पहले, जैसे ही विजय सिंहासन पर आसीन हुआ, सिंहासन ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा, ''धनुर्विद्या विजेता को अभिनंदन।''

सभा में जितने भी उपस्थित थे, ज़ोर से सबने तालियाँ बजायीं और विजय का अभिनंदन किया।

पर, राजा ने भैरव को आदेश दिया कि वह भी सिंहासन पर आसीन हो। राजा के इस आदेश ने सबको विस्मय में डाल दिया। किसी की भी समझ में नहीं आया कि जब एक बार धर्म सिंहासन ने अपना निर्णय सुना दिया तब भैरव को सिंहासन पर आसीन होने के लिए राजा ने जो आदेश दिया, उसके पीछे क्या कारण हो सकता है। पर, एक और बार सिंहासन ने फैसला सुनाते हुए कहा, ''धनुर्विद्या में विजेता को अभिनंदन''। उपस्थित लोगों को सिंहासन का यह अभिनंदन बड़ा ही विचित्र लगा।

परंतु नवनीतवर्मा ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया और भैरव को विजेता घोषित किया। फिर सेनाध्यक्ष से कहा, ''कल प्रातःकाल ही, इस सिंहासन को, मेरे गुरुवर विवेचन के गुरुकुल में भेज दें।''

वेताल ने इस कहानी को सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, इसमें कोई संदेह नहीं है कि तांबे का सिंहासन महिमामयी है। परंतु लुटेरे वीरबाहु के विषय में दिये गये सिंहासन के फैसले की राजा ने कोई परवाह नहीं की, उल्टे आदेश दियां कि उसकी नियुक्ति भ्रष्टाचार-निरोध विभाग में हो और वह भी प्रधान अधिकारी के पद पर। क्या यह निर्णय अनुचित नहीं है? अब रही, धनुर्विद्या में प्रतियोगिता की बात। धर्म सिंहासन की दृष्टि में विजय और भैरव दोनों धनुर्विद्या में माहिर हैं। परंतु, भैरव को ही विजेता घोषित करना अनुचित

नहीं लगता? राजा नवनीतवर्मा के ये निर्णय बिलकुल ही गलत लगते हैं। इनसे भी बड़ी गलती उसने की, धर्म सिंहासन को फिर से गुरु के पास भेजकर। मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''गुरु का दिया गया धर्म सिंहासन अवश्य ही महिमावान है, पर उसकी कुछ सीमाएँ हैं। राजा नवनीतवर्मा यह तथ्य जानता था। वीरबाहु के विषय में सिंहासन ने जो फैसला दिया, उसे अमल में न लाने का कारण था, गुप्तचरों के सरदार का कथन और उससे प्रस्तुत किया गया पत्र। उन दोनों ने राजा को सोचने पर बाध्य किया। उनके अनुसार, वीरबाहु, भ्रष्टाचारी संपन्नों के लिए सिंह और गरीबों का रक्षक बन गया। उसके जीवन में स्वार्थ के लिए कोई जगह ही नहीं थी। इसीलिए राजा ने उसे भ्रष्टाचारनिरोध विभाग का प्रधान अधिकारी बनाया। यह राजा की परिशीलन शक्ति का द्योतक है। धनुर्विद्या प्रतियोगिता के विषय में सिंहासन ने जो फैसला सुनाया, वह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहलाता। दोनों ने धनुर्विद्या में उस समय जो कौशल दर्शाया, उसी को उसने मुख्य माना, पर उनके पूर्वापर का परिशीलन नहीं किया। विजय राज वंशज था तो भैरव भील वंशज। धनुर्विद्या में शास्त्रीय प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए न ही उसका कोई योग्य गुरु था। इन्हीं तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए राजा ने उसे विजेता घोषित किया। धर्म-अधर्म का निर्णय करने में मनुष्य का मस्तिष्क अचूक है और इसकी बराबरी करनेवाला कोई है ही नहीं। राजा को अपने विवेक और लोक-ज्ञान पर पूरा-पूरा विश्वास था, इसीलिए आँख मूंदकर धर्म सिंहासन के फैसले को अमल में नहीं लाया। इसी वजह से, उसने जब जान लिया कि सिंहासन का कोई विशेष प्रयोजन नहीं है, तो उसे गुरु के पास भेज देने का आदेश दिया और यह निर्णय सर्वथा समुचित है।''

राज़ा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(दिनेश भट्टाचार्य की रचना के आधार पर)

बादलों तक बढ़ गई नाक

जापान के मुख्य क्षेत्र के चारों ओर फैले द्वीपों में से एक द्वीप में एक झील है। दरअसल झील में कोई विशेषता नहीं है; विशेषता है इसमें रहनेवाली मछलियों के एक झुण्ड में। वैसी मछलियाँ कहीं नहीं दिखाई देतीं। इनकी नाकें असाधारण रूप से लम्बी होती हैं।

जनश्रुति के अनुसार कथा इस प्रकार है:

एक समय उस झील के पास एक ढोलकिया रहता था जिसे गाँवों के लोग शादी-व्याहों और त्योहारों पर पैसे देकर ढोल बजाने के लिए बुलाया करते थे। वह इतना गरीब था कि एक बार जब भूकम्प से उसकी झोंपड़ी गिर पड़ी तो दूसरी झोंपड़ी बनाने के लिए उसके पास साधन नहीं था। वह चुपचाप झील के निकट पहाड़ी के नीचे एक गुफा में रहने लगा। धीरे-धीरे वह बूढ़ा हो चला। ढोल बजाने में असमर्थ होने के कारण उसकी कमाई बन्द हो गई। इसलिए उसके पास खाने के लिए कुछ न रहा। कुछ ग्रामीणों को उस पर दया आ गई। इसलिए वे कभी-कभी उसके लिए गुफा में कुछ खाना रख जाते थे।

वह एक दिन जब मरणासन्न हो रहा था, तब गाँव का एक लड़का कुछ खाना लेकर उसके पास आया। वही उसका अन्तिम भोजन साबित हुआ। उसने लड़के को कहा, "बेटे, तुम्हारी सेवा के लिए मुझे कुछ इनाम अवश्य देना चाहिये। यह मेरा ढोल है। क्योंकि मैं बड़े प्यार से इसकी देखभाल करता था, इसने हाल में मुझे एक वरदान दिया है। जब मैं किसी की नाक की ओर देखकर इसे बजाता हूँ और 'ऊपर, ऊपर' बोलता हूँ, तब उसकी नाक बड़ी होने लगती है। जब कहता हूँ 'नीचे-नीचे' तब नाक छोटी होने लगती है। आस-पास बहुत से ऐसे मर्द और औरत हैं जो अपने चेहरे के हिसाब से अपनी नाक को छोटी या बड़ी करना चाहते हैं। इसे मेरी ओर से भेंट के रूप में रख लो और पैसे कमाने के लिए इसका इस्तेमाल करो। लेकिन याद रखो, कभी भी अपनी या किसी अन्य की उत्सुकता के लिए ढोल की शक्ति का प्रयोग न करो। अच्छ बेटे, उम्मीद है, मेरे मर

जाने पर मेरे मृत शरीर की अन्तिम क्रिया का इन्तज़ाम कर दोगे।''

उस वृद्ध व्यक्ति ने उसके बाद तुरन्त देहत्याग कर दिया। लड़के ने गाँववालों की मदद से अच्छी तरह उसका अंतिम संस्कार कर दिया। तब वह उस विचित्र ढोल का प्रयोग करने लगा। जमीन्दार की बेटी की नाक बहुत छोटी थी। लड़का उसके पास गया और ढोल बजाते हुए 'ऊपर, ऊपर' बोलने लगा। और लड़की की नाक उसके चेहरे के अनुसार बिलकुल ठीक कर दी। इससे रातो रात वह प्रसिद्ध हो गया। बहुत लोग अपनी नाक को घटाने या बढ़ाने के लिए उसके पास आने लगे। लोग उसे चमत्कारी ढोलकिया कहने लगे और उसके काम के बदले काफी पैसे देने लगे।

यों एक-दो साल गुजर गये और वह अब अमीर आदमी बन गया। एक दिन वह जब झील के पास अकेला था, उसके मन में यह जानने की प्रेरणा जगी कि ढोल कितना अधिक कर सकता है। वह पीठ के बल लेट गया और अपनी नाक पर नज़र रखते हुए 'ऊपर, ऊपर' बोलने लगा। उसकी नाक बढ़ने लगी। कितना मज़ेदार था! वह और तेज़ी से 'ऊपर, ऊपर' बोलता गया और उसकी नाक भी बाँस के लट्ठे की तरह तेज़ी से बढ़ती लम्बी होती चली गई।

इस अनोखे दृश्य की ओर दो गरुड़ों की नज़र गई। वे इसके चारों ओर चक्कर लगाने लगे। लड़के को यह देखकर बड़ा मज़ा आया। लेकिन एक गरुड़ ने उसकी मुलायम नाक को अपनी चोंच से पकड़ किया और पीड़ा की एक लहर उसकी मीनार जैसी नाक के निचले हिस्से तक फैल गई।

अब वह यथासम्भव तेज़ी से 'नीचे-नीचे' जपने लगा। लेकिन गरुड़ ने अपनी पकड़ को नहीं छोड़ा। वास्तव में वह ऊपर की ओर उड़ने की कोशिश करने लगा।

फलस्वरूप ढोलकिया ऊपर उठ गया। जैसे-जैसे उसकी नाक छोटी होती गई, वह और ऊपर उठता गया। जब वह गरुड़ से बिलकुल छू गया, वह विशाल पक्षी चीख पड़ा। उसकी चोंच खुलते ही, ढोलकिया उसके मुँह से छूट कर झील में गिर पड़ा।

आह! वह लम्बी नाकवाली मछली में बदल गया था! उसे यह भी याद न रहा कि बूढ़े ढोलकिये ने उसे यह चेतावनी दी थी कि अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिए ढोल का प्रयोग कभी न करना। *(एम.डी)*

नया शिव मन्दिर

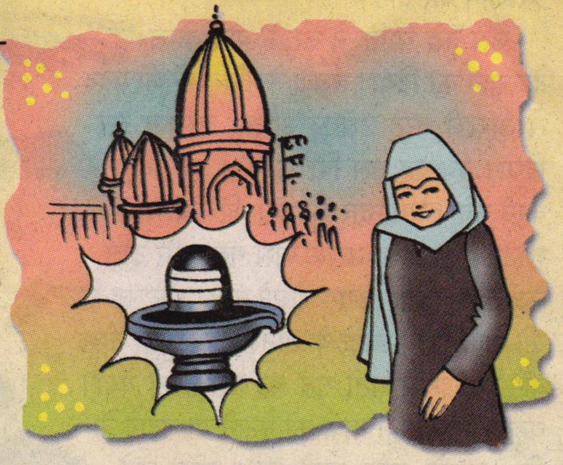

शिवरात्रि के दिन वाराणसी में रुद्रेश्वर महादेव का एक नया मन्दिर आम जनता के लिए पूजार्थ खोला गया। मन्दिर के विषय में अनोखी बात यह है कि यह मुख्य रूप से एक धार्मिक मुस्लिम महिला के दान से निर्मित किया गया है। पेशे से वकील नूर फातिमा को पिछले वर्ष एक सपने में बताया गया कि गंगेशपुर के इस मन्दिर के निर्माण में उसे सहायता करनी चाहिये। दूसरे दिन उसने अपनी बचत से मन्दिर के लिए कुछ धन अलग रख दिया। जैसे ही निर्माण-कार्य आरम्भ किया गया, हिन्दू भक्तों, धार्मिक नेताओं और आध्यात्मिक संस्थाओं से दान आने लगे। मुस्लिम समुदाय की ओर से भी-व्यक्तिगत और संस्थागत-सामान के रूप में दान आने लगे।

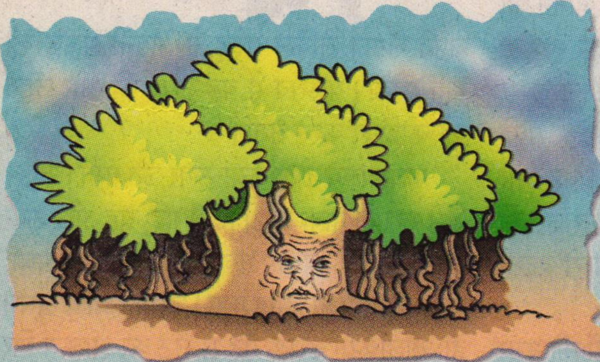

धरोहर वृक्ष

आन्ध्रप्रदेश सरकार ने अनन्तपुर जिले के गुडिबयालु गाँव में स्थित 'तिमम्मा मारी मनु' नामक ५५० वर्ष पुराने वट वृक्ष के रखरखाव के लिए दस लाख रुपये खर्च करने का निर्णय लिया है। इस वृक्ष का नाम, जिसे १९८९ में 'गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में प्रवेश मिल गया था, गुडिबयालु की तिमम्मा पर दिया गया, जिसकी निःस्वार्थ प्रभु-प्रार्थना से उसके पति को जीवन दान मिला। इस वृक्ष को देखने के लिए राज्य के सभी भागों से सालो भर हज़ारों महिलाएँ स्वाभाविक रूप से आकर्षित होती हैं। इस वृक्ष की १,२०० लटकती जड़ें २.१ हेक्टेयर क्षेत्र में फैली हुई हैं।

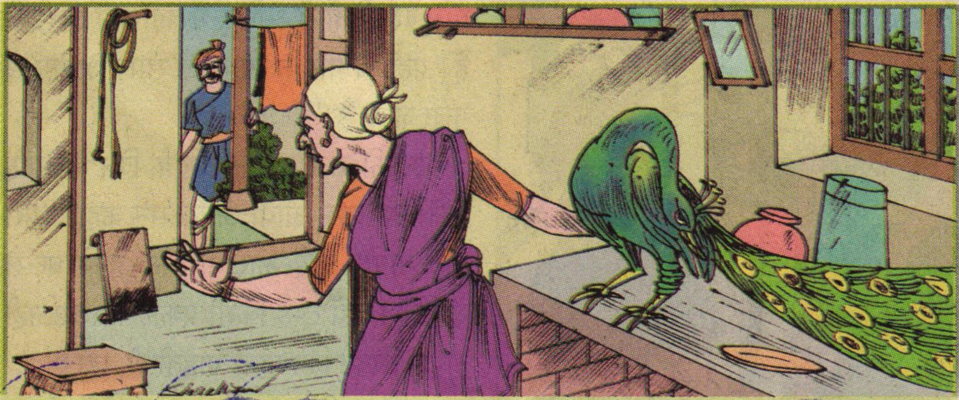

घर से लगाव

अन्नपूर्णा पैंसठ साल की बुढ़िया है। उसका पति हाल ही में मर गया। कुछ समय तक रिश्तेदार आते-जाते रहते थे, इसलिए उनके साथ रहते हुए उसे उतना दुख महसूस नहीं हुआ। पर, क्रमशः रिश्तेदारों का आना -जाना कम हो गया। उसका दामाद और बेटी व्यापार करते हुए शहर में रह रहे हैं। व्यापार में व्यस्त वे भी कभी-कभार आते हैं। इस स्थिति में अब वह अपने को अकेली महसूस करने लगी।

घर के काम-काजों को पूरा करने के बाद एक दिन दुपहर को घर के पिछवाड़े में बड़ के पेड़ के नीचे खाट पर लेट गयी। उस समय एक मोर अचानक उसपर आ बैठा।

अन्नपूर्णा ने आँखें खोलीं तो एक मोर को देखा। उसके पैर में चोट थी। वह समझ गयी कि कोई उसे अपना शिकार बनाना चाहता था। वह मोर को घर के अंदर ले गयी और घाव पर हल्दी लगाकर पट्टी बांधी। इतने में एक आदमी ने बाहर से चिल्लाते हुए पूछा, ''बुढ़िया, यहाँ के पेड़ पर एक मोर आ गिरा। क्या तुमने उसे देखा?''

''नहीं तो। हमारे गाँव में थोड़े ही मोर हैं। फिर मोर कहाँ से और कैसे दिखेगा?'' आश्चर्य का नाटक करते हुए अन्नपूर्णा ने कहा।

बिना कुछ कहे वह आदमी चला गया। उस दिन से वह मोर के पैर में पट्टी बांधने लगी। समय पर उसे आहार देकर उसकी अच्छी तरह से देखभाल करने लगी। कुछ ही दिनों में मोर का घाव भर गया और कभी-कभी अपने पंख फैलाकर वह नाचने भी लगा।

जमींदार को जब यह समाचार मालूम हुआ तब एक दिन वह अन्नपूर्णा के घर आया और कहा, ''अन्नपूर्णा, मोर को पालने की मेरी प्रबल इच्छा है। मैंने बहुत कोशिश की, पर कोई मोर मेरे हाथ नहीं आया। हाल ही में मालूम हुआ कि

सोमनाथ

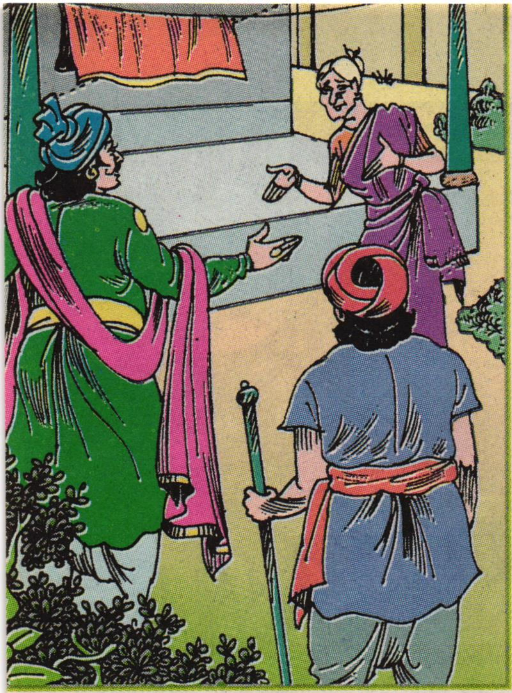

परंतु दस दिनों से अधिक मैं वहाँ नहीं रह पाती हूँ। यहाँ तो मोर के साथ मेरा समय आराम से गुज़र जाता है।''

उसकी बातों पर जमींदार के दिल में उसके प्रति दया उभर आयी और उसने कहा, ''मेरी बात मानो। तुम्हें और मोर को अपने घर ले जाऊँगा। वहाँ तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। जितने दिन रहना चाहती हो, रहो।''

जमींदार की बातें सुनकर अन्नपूर्णा में उत्साह भर आया। जमींदार के साथ उसके घर में रहने की इच्छा उसमें क्षण भर के लिए जगी, पर, जैसे ही उसे अपने सुंदर, दूब की घास का घर, उसके चारों ओर की चहारदीवारी, गाँव के बाहर दो एकड़ ज़मीन, और अपना गाँव याद आया, वह भावाकुल हो गयी।

जमींदार यह भांप गया और बोला, ''अन्नपूर्णा, संकोच मत करो। मेरे घर आओगी तो अपने मोर की देखभाल भी अच्छी तरह कर सकती हो और साथ ही मेरे घर में भी तुम स्वतंत्र रह सकती हो। तुम पर कोई हुक्म नहीं चलायेगा। मैं ग्रामाधिकारी से कह दूँगा कि वह तुम्हारे घर की रक्षा करे। तुम्हें अपने खेत से जो आमदनी मिलेगी, उसे तुम्हें दिलाने का इंतजाम भी कर दूँगा।''

''यह तो खुशी की बात है, परंतु...'' कहते-कहते वह रुक गयी।

''लगता है, तुम कुछ कहने से झिझक रही हो। निस्संकोच कहो,'' जमींदार ने कहा।

''आपसे क्या छिपाऊँ साहब! जब हर रोज़

तुम्हारे पास एक पालतू मोर है। मुझे दे दो। मैं तुम्हें सोने की दस अशर्फियाँ दूँगा।''

अन्नपूर्णा ने निस्संकोच कह डाला, ''यह आप क्या कह रहे हैं जमींदार साहब? जिस मोर के बारे में आप बता रहे हैं, उसकी मैं माँ हूँ। उसके बिना ना ही मैं रह सकती हूँ ना ही वह। यह बिल्कुल सच है।''

''ठीक है'' कहते हुए जमींदार चला तो गया, पर चार हफ्तों के बाद फिर से आया और कहने लगा, ''देखो, अन्नपूर्णा, तुम कभी गाँव छोड़कर कहीं चली जाओगी तो इसका पालन-पोषण कौन करेगा?''

अन्नपूर्णा क्षण भर के लिए सोचती रही और फिर कहा, ''आपने ठीक ही कहा। औरों की तरह अपनों के यहाँ जाने की मेरी भी इच्छा होती है,

खा लेने के बाद बड़ के पेड़ के नीचे सुतली की चारपाई पर लेट जाती हूँ, तब पेड़ के पत्ते लोरी के साथ थपकी देते हुए सुलाते हैं। अगर यह घर छोड़ दूँ तो वह लोरी सुनायी नहीं पड़ेगी न?''

जमींदार ने प्रेम-भरे स्वर में कहा, ''तुमने ठीक कहा। जब अपने घर को इतना चाहती हो तो उसे छोड़कर मत आना। तुम्हारे घर के चारों ओर हरियाली ही हरियाली हो। इसका इंतज़ाम मैं करूँगा। मोर को देखने की जब इच्छा होगी, मैं खुद चला आऊँगा। अपने घर से तुम्हारा जो लगाव है, मोर पर तुम्हारी जो करुणा है, वे सचमुच ही महान हैं।'' यों कहकर जमींदार चला गया और अपने बादे के अनुसार घर के आसपास के स्थल को वन के रूप में बदल डाला।

एक महीना बीत गया। एक दिन अन्नपूर्णा ने एक थाली में पका अमरूद और दाने भरकर मोर के सामने रखा, और घर के अंदर जाने ही लगी कि इतने में पीछे से आवाज़ आयी, ''माँ, अब से मैं यह खा नहीं सकता। भात और कोई तरकारी परोसना।''

अन्नपूर्णा ने फ़ौरन पलटकर देखा। वहाँ उसने हँसते हुए दस साल की उम्र के एक बालक को देखा। पहले तो वह चकित होकर रह गयी, पर फिर नाराज़ होती हुई बोली, ''अरे बालक, मेरा मोर कहाँ है? क्या कर दिया तुमने? जानते हो, वह मेरी पालतू संतान है।'' कहती हुई वह चारों ओर देखने लगी।

बालक ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''माँ, मैं ही

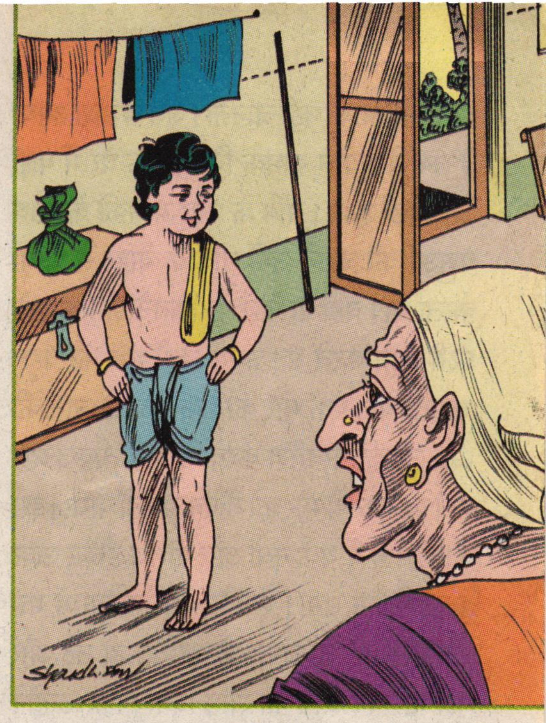

तुम्हारी वह पालतू संतान हूँ। प्रेम व अनुकंपा से ओतप्रोत तुम्हारे आदर के कारण ही मुझे मुनि के शाप से मुक्ति प्राप्त हुई है। देखो, यह उसी घाव का निशान है, जिसपर तुमने पट्टी बांधी। यह अमिट निशान है,'' कहते हुए उसने अपने पैर पर का निशान दिखाया।

पैर पर निशान व मुनि के शाप के बारे में सुनकर अन्नपूर्णा को लगा कि वह सच ही बता रहा है। उसे अपने पास लेती हुई उसने कहा, ''मोर लाड़ले, मुनि शाप देने की शक्ति रखते हैं, वरदान दे सकते हैं, यह मैंने अपने बचपन में अपनी दादी के मुंह से सुना था। पर यह बताना कि उस मुनि ने तुम्हें शाप क्यों दिया?''

''माँ, वह बड़ी ही लंबी कहानी है। बड़ी भूख लगी है, इसलिए संक्षेप में बताऊँगा। मैं अपने

माता-पिता को नहीं जानता। जब से होश आया है तब से भूपाल नामक किसान के घर में पला और बड़ा हुआ। गाँव के और बालकों के साथ पशुओं को चराने उन्हें गाँव के बाहर ले जाया करता था। वहाँ के पेड़ों पर कितने ही प्रकार के पक्षी हुआ करते थे। उनमें से मैं मोर को बहुत चाहता था। एक मोर को पकड़कर ले जाने की और उसकी परवरिश करने की मेरी तीव्र इच्छा थी। पर एक भी मोर को मैं पकड़ नहीं पाया। इस कोशिश में मैं थक गया और नाराज़ होकर ऊपर पत्थर फेंकने लगा। एक पत्थर, तपस्या में मग्न एक मुनि को जा लगा। वे क्रोधित हो उठे और मुझे मोर बन जाने का शाप दिया। फिर उन्होंने ही मुझपर कृपा करके शाप से मुक्ति का मार्ग भी बताया।''

''उन्होंने बताया कि समस्त जीवों के प्रति जो प्रेम रखते हैं और उनका आदर करते हैं, उन्हीं की सहायता से किसी न किसी दिन पुनः मनुष्य बनोगे। माँ, तुम्हारे कारण ही उस शाप से मुझे मुक्ति मिली है।''

बालक की बात को सुनकर अन्नपूर्णा बेहद प्रसन्न हुई। उसे फ़ौरन भोजन खिलाते हुए कहा, ''मोर लाडले, इस प्रदेश के जमींदार मोरों को बेहद चाहते हैं। वे तुम्हें ले जाकर तुम्हारी परवरिश करना चाहते थे। उन्हीं के दयालु स्वभाव के कारण हमारे घर के चारों ओर हरियाली है, पेड़-पौधे हैं, जीव-जंतु हैं। क्या उनकी कोई मदद कर सकते हो?''

बालक ने अपना दिमाग़ लड़ाया और कहा, ''मैं मोर बनकर कुछ समय तक मोरों के बीच में रह चुका हूँ। उनमें कुछ मोरों को अपने घर के पेड़ों पर बैठा सकता हूँ।''

''हाँ, हाँ, अवश्य यह प्रयत्न करना बेटे। जमींदार बहुत खुश होंगे।'' अन्नपूर्णा ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा।

बालक घर के पिछवाड़े में गया और मोर की तरह चीखने लगा। थोड़ी ही देर में मोर उत्तर दिशा से होते हुए आकर पेड़ पर आ बैठे। कुछ ही दिनों में अन्नपूर्णा का उद्यानवन हरे-भरे पेड़ों, पक्षियों, जंतुओं से भर गया।

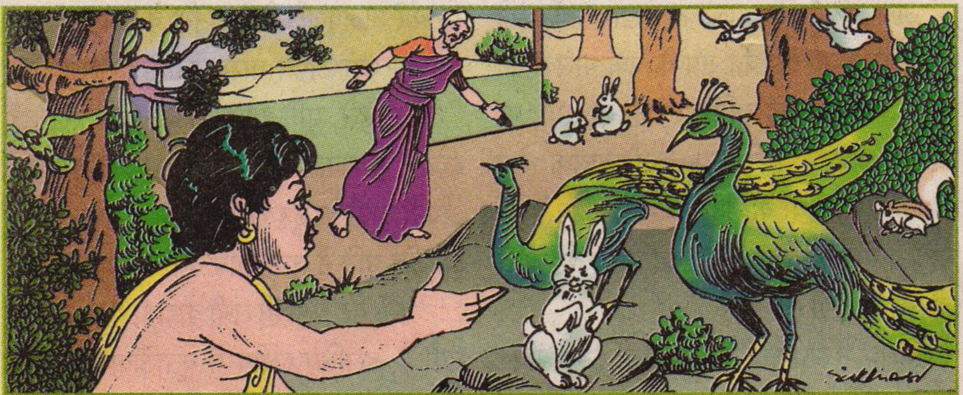

पाठकों के लिए एक कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

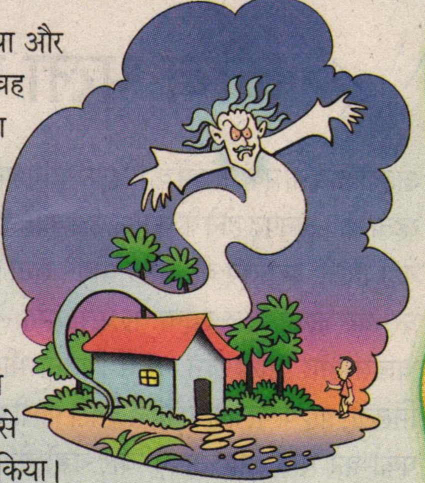

श्रीपुर का चक्रधर कंजूस था। वह एक नीच व्यक्ति था और दूसरों को परेशान करने में प्रसन्नता का अनुभव करता था। वह अविवाहित था और अपने पुश्तैनी मकान में अकेला रहता था। वह अन्त में बीमार पड़ गया और स्वर्ग सिधार गया।

उसके भूत ने घर में अड्डा बना लिया था। आस पास के लोगों ने उसे कभी नहीं देखा लेकिन असमय भयानक आवाज़ें उन्हें सुनाई पड़ती थीं।

कुछ महीनों के बाद राम नामक एक गरीब आदमी उस खाली मकान में रहने लगा। चक्रधर को इस बात पर बहुत क्रोध आया कि किसी को उसके घर में घुसने की हिम्मत कैसे हुई। उसने घुसपैठिये को बाहर निकाल देने का निश्चय किया। उस दिन से जब भी राम घर से बाहर जाता, उस पर पत्थर बरसते। रात को छत पर पत्थर गिरने की आवाज़ से वह परेशान रहता। लेकिन राम घर को छोड़ना नहीं चाहता था। उसे यह आशा थी कि भूत निराश होकर तंग करना छोड़ देगा, इसलिए वह कुछ दिनों तक यातना झेलता रहा। लेकिन चक्रधर सख्त मिट्टी का बना था, इसलिए उसका आक्रमण होता रहा। अन्त में, राम ने भूत की नीचता को अपने हित में बदल देने का निश्चय किया।

अपनी भाषा में १००-१५० शब्दों में कहानी पूरी करो। एक उपयुक्त शीर्षक दो और अपनी प्रविष्टि को निम्नलिखित कूपन के साथ लिफाफे में भेज दो, जिस पर लिखा हो- 'पढ़ो और प्रतिक्रिया दो'।

अन्तिम तिथिः ३१ दिसम्बर २००५

नाम ---उम्र-----------जन्मतिथि----------------------

विद्यालय ---कक्षा-----------

घर का पता --

---पिनकोड----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर | प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

गुजरात की एक लोककथा

कौन भला है, कौन बुरा है?

अहवा नाम के एक गाँव में कभी एक गरीब ब्राह्मण रहता था। अनपढ़ होने के कारण उसे कोई नौकरी नहीं मिली, इसलिए वह भीख माँगने लगा। वह घर-घर जाकर कुछ खाना या पैसा माँग लेता। चावल और आटा दिन भर में जितना भी उसे मिलता, वह पत्नी को जाकर दे देता। पत्नी खाना पका कर पति और अपने चार बच्चों के साथ मिल-जुल कर खा लेती। कभी-कभी बच्चों को खिलाने के बाद पति-पत्नी के लिए खाना नहीं बच पाता; तब वे भूख मिटाने के लिए ज्यादा पानी पी लेते थे। उसे भीख में शायद ही कोई नकद पैसा देता, लेकिन जब मिल जाता तब वह खाने की कमी को पूरा करने के लिए उससे सब्जी खरीद लेता।

बच्चों और उनके माँ-बाप को प्रायः आधा पेट ही खाना मिल पाता। ब्राह्मण इस बात को जानता था, फिर भी उसकी पत्नी ने एक दिन उसे बताया, "तुम जो कुछ लाते हो, वह एक वक्त के लिए भी पूरा नहीं पड़ता। जीवन-निर्वाह के लिए और कोई उपाय सोचो।"

"मैं यह जानता हूँ, लक्ष्मी", उसने अपने पेट को कस कर दबाते हुए कहा, "लेकिन इससे अधिक मैं और क्या कर सकता हूँ? तुम्हारा कोई सुझाव हो तो बताओ।"

लक्ष्मी ने कुछ क्षण सोच कर कहा, "तुम राजा से क्यों नहीं मिलते? सुना है, वे बहुत दयालु हैं। मुझे विश्वास है, वे तुम्हें कुछ अवश्य दान देंगे।"

"ठीक है, मैं राजा के पास जाऊँगा," ब्राह्मण ने कहा, "लेकिन जब वे मुझे कुछ दान देंगे, तब मैं क्या कह कर उन्हें आशीर्वाद दूँ?"

"तुम्हें उसकी वजह से परेशान नहीं होना चाहिये", लक्ष्मी ने विश्वास के साथ कहा, "जो कुछ उस समय तुम्हारे मन में आ जाये, कह देना।"

दूसरे दिन सुबह ब्राह्मण महल की ओर चल पड़ा। उसे राजा के पास पहुँचा दिया गया। राजा ने उसकी करुणा भरी कहानी सुनी और पूछा, "बताइये, मैं आप को क्या दूँ?"

"महाराज, आप हमसे बेहतर जानते हैं", ब्राह्मण ने विनम्रतापूर्वक कहा। "मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ, महाराज! कि मैं एक गरीब ब्राह्मण हूँ।" फिर उसने अपना सिर उठाया, राजा की ओर देखा और आगे कहा, "भला हमेशा भला रहता है, बुरा हमेशा बुरा रहेगा।"

राजा उसे देख कर मुस्कुराया और फिर एक कागज पर कुछ लिख कर उसके हाथ में दे दिया। "इसे मेरे ख़ज़ांची को दे दो।"

ब्राह्मण शाही खजांची को ढूँढ़ने गया। ख़ज़ांची महल की ड्योढ़ी के पास बैठा था। उसने ब्राह्मण से कागज लेकर उसे चाँदी का एक सिक्का दे दिया। ब्राह्मण ने उस सिक्के को अपनी पत्नी को दे दिया। पत्नी ने बाहर जाकर भोजन के कुछ सामान खरीदे। उस रात ब्राह्मण, उसकी पत्नी और उसके बच्चों ने जी भर खाना खाया।

ब्राह्मण दूसरे दिन भी सवेरे राजा के पास गया। राजा ने एक कागज पर कुछ लिख कर उसे दे दिया। शाही ख़ज़ाने से उसे चाँदी का एक सिक्का और दे दिया गया।

यह तीन-चार दिनों तक चलता रहा। राजा का एक नौकर ब्राह्मण का राजा तथा शाही ख़ज़ांची के पास नियमित रूप से जाना ध्यान से देखता था। उसकी उत्कंठा बढ़ गई। उसने उसका पीछा किया और देखा कि वह वापस

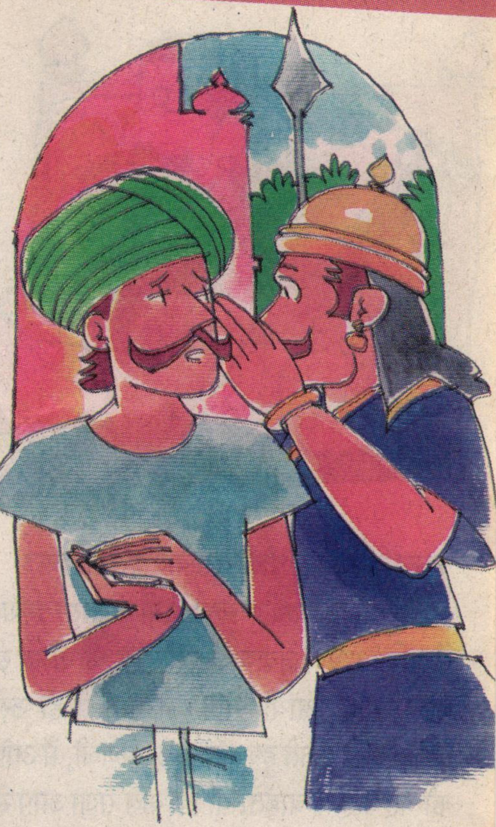

अपने गाँव जाने वाले मार्ग पर जा रहा है। मान लें कि कल ब्राह्मण महल में न आये तो उसी दिन उसे अवश्य पकड़ना चाहिये।

उसने अपने कदम तेज कर दिये। और जब वह ब्राह्मण के निकट पहुँचा, उसने उसका कन्धा थपथपाया। ब्राह्मण ने पीछे मुड़ कर देखा। "महाशय, आप महल में हर रोज आते हैं, राजा से एक कागज लेते हैं और ख़ज़ांची से एक सिक्का वसूल कर चले जाते हैं। आपने कभी मेरे बारे में नहीं सोचा। नहीं न? मैं आप को बिना रोक-टोक महल के अन्दर-बाहर आने-जाने देता हूँ। आपने कभी नहीं दी मेरी..." उसने अपना वाक्य भी पूरा नहीं किया कि ब्राह्मण उसकी बात पर

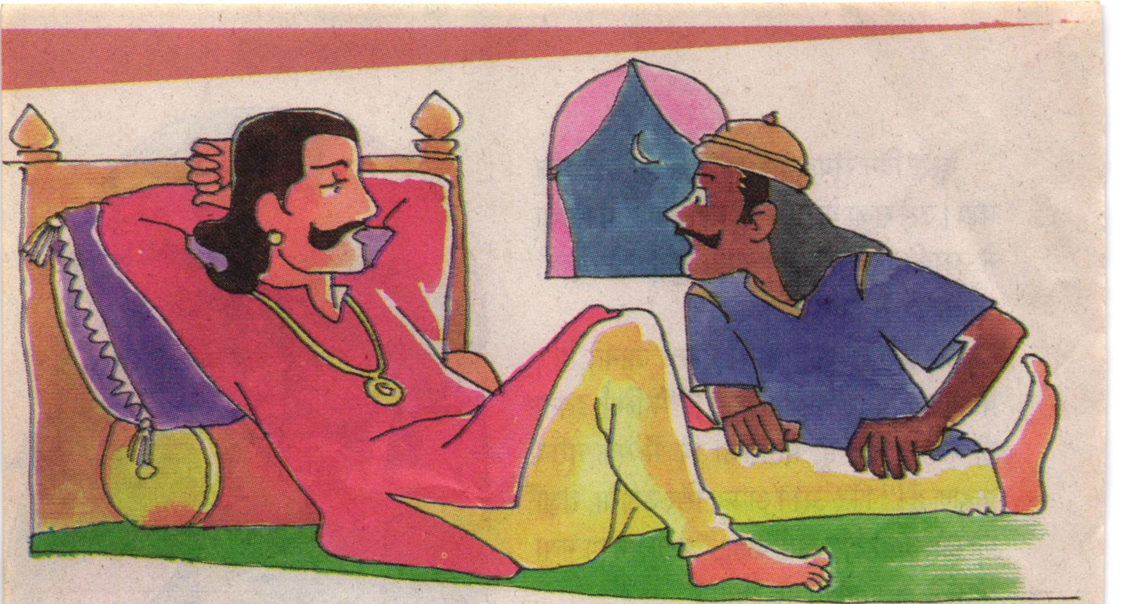

ध्यान दिये बिना पीछे मुड़ कर चलता बना।

दूसरे दिन ब्राह्मण अन्य दिनों की तरह दरबार में हाजिर हुआ। जब वह ख़ज़ांची के कार्यालय से वापस बाहर आया, नौकर ने मार्ग में ही उसे गुस्ताखी से रोकते हुए कहा, "ब्राह्मणजी, मैं आप को यह कहना चाहता था कि कल राजा आप से बहुत नाराज़ थे।"

ब्राह्मण के लिए यह परेशानी की बात थी। कुछ क्षणों के लिए वह शान्त बना रहा, फिर बोला, "लेकिन मैं नहीं समझता कि मैंने राजा को मुझसे नाराज़ होने का कोई मौका दिया हो। बताओ तो, क्या हुआ?"

नौकर ने और निकट आकर पहले इधर-उधर देखा, फिर धीमे से कहा, "कल रात जब मैं राजा के पाँव दबा रहा था तब उन्होंने मुझसे कहा, 'तुमने ब्राह्मण को देखा नहीं, जाने से पहले वह कुछ आशीर्वादी वचन बोलता है, लेकिन उसके मुँह से दुर्गन्ध आती है।' लेकिन मैं कौन हूँ कहनेवाला कि वे तुमसे न मिलें।"

"सचमुच, तुम कैसे कह सकते हो," ब्राह्मण ने कहा, "फिर भी तुम्हें धन्यवाद देता हूँ कि मुझे विश्वास में लेकर यह सब बता दिया। मैं सावधान रहूँगा और कल जब मैं आशीर्वाद देने राजा के निकट जाऊँगा, तब अपने मुँह को कपड़े से ढक लूँगा।" तब वह गाँव की ओर बढ़ गया और नौकर भी दब्बू की तरह लौट गया।

दूसरे दिन प्रातः ब्राह्मण ने राजा के पास जाने से पूर्व अपने मुँह और नाक को ढक लिया। ब्राह्मण के भाग्य से राजा ने कुछ पूछताछ नहीं की और हर रोज की तरह कागज़ देकर उसे विदा कर दिया। ब्राह्मण का, नौकर ने भी उस दिन पीछा नहीं किया। इसमें ब्राह्मण को कुछ भी असामान्य नहीं लगा।

रात्रि में, नौकर ने राजा के पाँव दबाते समय यों ही कहा, "ब्राह्मण, जो आप के पास हर रोज आता है बड़ा घमण्डी है।"

राजा बिस्तर पर उठ कर बैठ गया, "ऐसा क्यों कहते हो? मुझे तो वह नम्र, धार्मिक और

मधुर भाषी लगता है। हर रोज वह मुझे आशीर्वाद देता है।''

''लेकिन महाराज, क्या आपने नहीं देखा कि आज उसने अपना मुँह ढक लिया था?'' पाँव दबाते हुए और सिर उठाये बिना नौकर बोला।

''हाँ, शायद उसके दाँत में दर्द हो या कुछ और बात हो'', राजा ने लापरवाही से कहा।

''नहीं महाराज'', नौकर बोला। ''मैंने उससे पूछा और जानते हैं उसने क्या कहा? उसने कहा कि आशीर्वाद देते समय आप के कान से बदबू आ रही थी; इसीलिए उसे अपना मुँह ढकना पड़ा।''

राजा ने बात को आगे नहीं बढ़ाया। बिस्तर में लेटते समय ब्राह्मण का नित्य दिन का आशीर्वचन गूंजने लगा, ''भला हमेशा भला रहता है, बुरा बुरा ही बना रहता है।''

दूसरे दिन ब्राह्मण रोज की तरह महल में गया, लेकिन मुँह ढके बिना। लौटते समय नौकर ने सामने आकर कहा, ''अब अधिक दिन तक मुझे बख्शिश दिये बिना नहीं बच सकते!'' बात यहाँ तक आ गई।

''ओह! मुझे खेद है, मैं बिलकुल भूल गया था।'' ब्राह्मण ने क्षमा याचना करते हुए कहा। ''मैं आज चाँदी का सिक्का छोड़ दूँगा। तुम यह कागज़ ख़ज़ांची के पास ले जाओ और मेरे बदले तुम सिक्का ले आओ।'' ब्राह्मण अपनी राह चला गया।

नौकर तुरन्त कागज लेकर शाही ख़ज़ांची के पास गया। ख़ज़ांची ने उसे पढ़ा और नौकर को रुकने के लिए कहा। शीघ्र ही महल के दो अंगरक्षकों के साथ एक नाई आया। उन्होंने नौकर को कस कर पकड़ कर रखा और तभी नाई ने उसके कान और नाक काट दिये।

बहते खून की हालत में वह ख़ज़ांची के खिलाफ शिकायत करने के लिए राजा के पास दौड़ा गया। ''ब्राह्मण को दिया गया चिट तुम्हें कैसे मिल गया?'' राजा ने डाँटकर पूछा।

''महाराज! मैंने उससे बख्शिश माँगी और उसने उसके बदले चिट दे दिया,'' नौकर ने कहा।

''तुमने उस बेचारे ब्राह्मण को सब झूठ बताया।'' राजा ने कहा। ''यह ठीक ही हुआ कि तुम्हें इसकी सज़ा भुगतनी पड़ी!''

उनकी अन्तिम होली

गुजरात में डोमकेडी के आदिवासियों ने इस वर्ष अपनी अन्तिम होली मनाई। दूसरे दिन ही वहाँ का सारा क्षेत्र नर्मदा नदी के पानी में जलमग्न हो गया।

आश्चर्य की बात है कि इस पारम्परिक पर्व से एक दिन पहले जल पीछे हट गया था, जो आदिवासियों के लिए खुशी की बात थी। ये आदिवासी जम्बुआ ज़िला के जलसिन्धी में होली मनाकर मध्यप्रदेश से लौटकर आये थे।

इनके साथ थी मेधा पटकर जो नर्मदा नदी के बाँध की ऊँचाई को बढ़ाने के विरुद्ध आन्दोलन का नेतृत्व और विस्थापित आदिवासियों के पुनर्वास के लिए माँग करती आ रही थी।

होली के पहले की रात को उन लोगों ने ६० ढोलों के ताल पर नृत्य किया। प्रातःकाल उन्होंने होलिका दहन किया और अपने देवता मण्टो के लिए होम किया।

यह क्षेत्र कभी ५२ आदिवासी समूहों का आवास था। इस वर्ष के उत्सव में महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के आदिवासी सम्मिलित हुए थे।

डोमकेडी के आदिवासियों ने अपनी आँखों से उस क्षेत्र को नर्मदा नदी के जल में डूबते देखा और वे निकट की पहाड़ियों की ऊँचाइयों पर भागकर चले गये।

0|5

शिकारी कुत्ता

नागराज एक साधारण किसान था। दादा और पिता से चार एकड की जो उपजाऊ भूमि मिली, उसे बेच दी और जंगल के पास ही की बंजर भूमि खरीद ली। खेती-बाड़ी में वह कुशल था, इसलिए उसने पता लगाया कि कौन-सी बंजर भूमि किस फसल के लिए उपयुक्त है। तय कर चुकने के बाद उसने आठ एकड़ की भूमि को अनाज के लिए और बाकी भूमि फलों के बगीचे के लिए अलग किया।

इसके बाद नागराज ने दस कुलियों को काम पर लगाया और उनके साथ मिलकर उसने भी मेहनत की। चार-पाँच सालों में, आसपास के भूस्वामियों में से एक भूस्वामी हो गया।

अब नागराज को एक नयी समस्या का सामना करना पड़ा। उस बंजर भूमि को जिन हिरणों, जंगली सुअरों, सियारों ने देखा तक नहीं था, वे रात में फसल को बरबाद करने लगे।

वह सोच में पड़ गया कि क्या किया जाए? उस समय हाट में उसकी मुलाक़ात एक और गाँव के भूस्वामी से हुई। उसकी समस्या की जानकारी पाकर उस भूस्वामी ने कहा, ''तुम्हारी समस्या बड़ी ही छोटी समस्या है। एक शिकारी कुत्ता ख़रीदना और रात में उसे खेतों में छोड़ देना। उसके भयंकर रूप को देखकर, वे जंतु तुम्हारे खेत में आने का साहस नहीं करेंगे।''

नागराज उस भूस्वामी की सलाह से बेहद खुश हुआ। घर आते ही लच्छू नामक अपने नौकर को बुलाया और विषय बताकर कहा, ''देखो, बीस रुपये दे रहा हूँ। हाट जाना और एक शिकारी कुत्ता ख़रीदकर ले आँना।'' लच्छू ने रुपये ले लिये और थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, ''मालिक, शिकारी कुत्ता बीस रुपयों में नहीं बिकता। और बीस रुपये दीजिये।''

नागराज ने उसे और बीस रुपये दिये। रुपये लेकर जाते-जाते लच्छू ने पूछा, ''मालिक, यह शिकारी कुत्ता होता कैसा है?''

- जय यादव

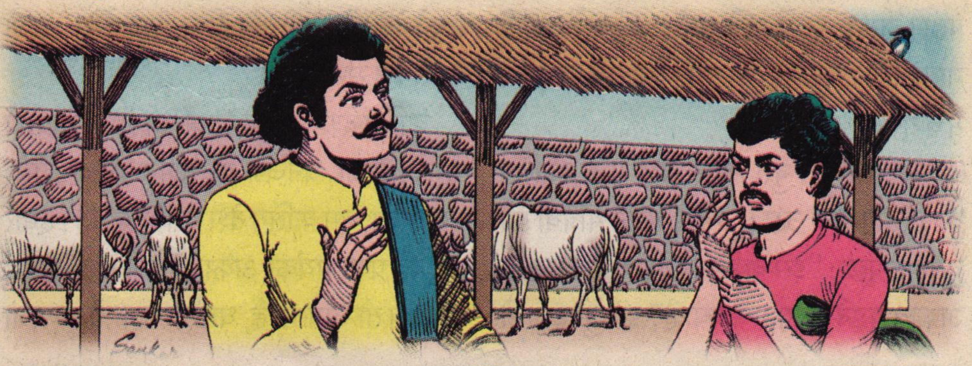

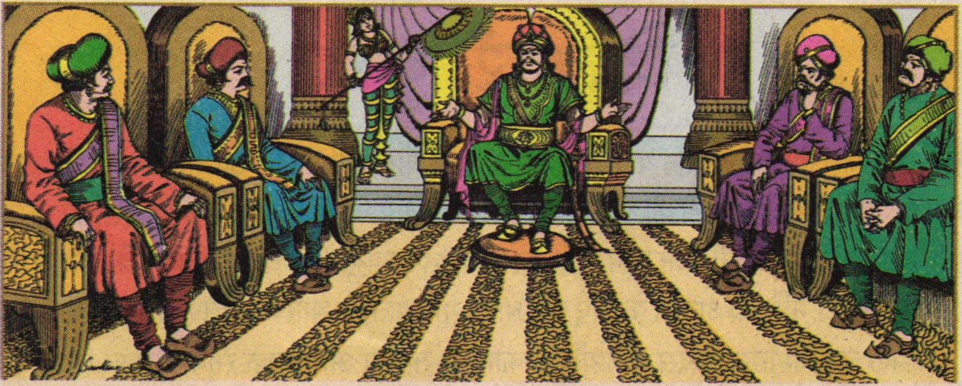

धर्माचरण

प्राचीन काल में काशी राज्य पर ब्रह्मदत्त शासन करते थे। उसी काल में बोधिसत्व ने धनंजय के नाम से कुरु राजा के रूप में इन्द्रप्रस्थ में जन्म लिया। उनके राज्य में अकाल कभी पड़ता न था। प्रजा सुखी थी।

सारे जंबू द्वीप में ख़बर फैल गयी कि धर्माचरण और दान करने में इंद्रप्रस्थ के राजा धनंजय की बराबरी करने वाला कोई नहीं हैं।

उन्हीं दिनों दंतपुर को अपनी राजधानी बनाकर कलिंग देश पर कालिंग नामक राजा राज्य करते थे। उस राज्य में एक बार भयंकर अकाल पड़ा। जनता भूखों मरने लगी। कई बच्चे अपनी माताओं की गोद में ही मर गये। जनता में हाहाकार मच गया।

देश की उस बुरी हालत देख राजा कालिंग का दिल पसीज उठा। उन्होंने अपने मंत्रियों को बुलाकर पूछा, ''इस वर्ष हमारे देश में ऐसे भयंकर अकाल पड़ने का कारण क्या है? इस बुरे हाल से बचने का उपाय क्या है?''

मंत्रियों ने जवाब दिया, ''महाराज, देश में जब धर्म की हानि होती है, तभी ऐसी आपदाएं आती हैं। इंद्रप्रस्थ के राजा धनंजय अपने धर्म का पालन करते हैं! इसीलिए उस देश में कभी अकाल नहीं पड़ता। जनता सुखी है और देश समृद्ध है।''

''तब तो तुम लोग एक काम करो। आज ही इन्द्रप्रस्थ जाकर राजा धनंजय के दर्शन करो। उनके द्वारा सोने के पत्रों पर धर्म-सूत्र लिखवा कर ले आओ। हम भी उन सूत्रों पर अमल करके अपने देश को सुखी और संपन्न बना लेंगे।'' राजा कालिंग ने समझाया।

कलिंग देश के मंत्री स्वर्ण पत्र लेकर इंद्रप्रस्थ पहुँचे। राजा धनंजय के दर्शन करके बोले, ''महाराज, हम कलिंग देश के निवासी हैं। हमारे देश की प्रजा भयंकर अकाल का शिकार हो गई है। आप तो धर्मात्मा हैं, धर्माचरण करते हुए प्रजा

पर शासन करते हैं। इसीलिए आपकी प्रजा सुखी और संपन्न है। हमारे राजा को जिन धर्मसूत्रों का पालन करना चाहिए, उन्हें आप इन सोने के पत्रों पर लिख दीजिए। हमारे राजा उन धर्म-सूत्रों का पालन करके अकाल से प्रजा को मुक्त करेंगे।'' इन शब्दों के साथ कलिंग देश के मंत्रियों ने सोने के पत्रों को धनंजय के सामने रखा।

धनंजय ने प्रणाम करके कहा, ''महामंत्रियो! क्षमा कीजिए। इन पत्रों पर धर्म-सूत्र लिखने की योग्यता मैं नहीं रखता, क्योंकि एक बार मेरे द्वारा धर्म का उल्लंघन हुआ है। हमारे देश में तीन सालों में एक बार कार्तिक उत्सव होता है। उस वक़्त राजा को एक तालाब के किनारे यज्ञ करके चारों तरफ़ चार बाण छोड़ने पड़ते हैं। एक बार मैंने जो चार बाण छोड़ दिये, उन में से तीन तो हाथ लगे, मगर चौथा बाण तालाब में गिर गया। उसके आघात से मछलियाँ और मेंढक मर गये होंगे।''

ये बातें सुन मंत्री आश्चर्य में आ गये। इसके बाद वे राजमाता मायादेवी के पास पहुँचे। सारी बातें उन्हें सुनाकर बोले, ''माताजी, आप कृपया हमारे वास्ते धर्म-सूत्र लिख दीजिए।''

''बेटे, मैंने भी धर्म का अतिक्रमण किया है। एक बार मेरे बड़े बेटे ने मुझे सोने की एक माला भेंट की। मैंने अपनी बड़ी बहू को संपन्न परिवार की समझ कर वह माला छोटी बहू को दे दी। लेकिन दूसरे ही पल मेरे भीतर का पक्षपात मुझे मालूम हुआ और इस बात का मुझे बड़ा दुख हुआ। इसलिए दूसरों को धर्म-सूत्र लिख कर देने की

योग्यता मैं नहीं रखती। आप लोग कृपया किसी योग्य व्यक्ति के पास जाइये।''

इसके बाद कलिंग देश के मंत्री राजा के भाई नंद के पास पहुँचे। उन्होंने भी एक बार धर्म का अतिक्रमण करने की बात बताई, ''मैं रोज शाम को अपने रथ पर अंतःपुर में जाता हूँ। अगर मैं अपना चाबुक रथ पर छोड़ जाता हूँ तो मैं रात को अंतःपुर में नहीं टिकता। ऐसी हालत में रथ का सारथी मेरे इन्तज़ार में बैठा रहता है। यदि मैं चाबुक अपने साथ ले जाता हूँ तो सारथी रथ हांक ले जाता है, और दूसरे दिन सवेरे रथ ले आता है। एक दिन मैं चाबुक को रथ पर छोड़ कर अंतःपुर में चला गया। उस दिन अंतःपुर से लौटने का मेरा विचार था। लेकिन एक दिन जब रथ में चाबुक छोड़ कर गया तो ज़ोर से पानी बरसा। राजा ने, जो मेरे बड़े भाई हैं, मुझे लौटने

नहीं दिया; इस कारण मैं रात को अंतःपुर में ही रह गया। पानी में भीगते मेरा सारथी रात भर रथ पर बैठा ही रह गया। उसे इस प्रकार तक़लीफ़ पहुँचा कर मैंने धर्म का अतिक्रमण किया है।''

इसके बाद कलिंग के मंत्री राजपुरोहित के पास पहुँचे। लेकिन उन्होंने भी धर्म का अतिक्रमण करने की घटना बताई, ''एक दिन मैं राजमहल को जा रहा था। रास्ते में मुझे एक रथ दिखाई दिया। उस पर सोने का मुलम्मा चढ़ाया गया था। उसे देखते ही मेरे मन में लालच पैदा हो गया। मैं जब राजा के पास पहुँचा, तब वे मुझे देखकर बोले, ''पुरोहितजी, यह रथ मैं आपको भेंट करता हूँ।'' उसी वक़्त मुझे अपने लालच की याद हो आई और पछताते हुए मैंने उस रथ को लेने से इनकार किया। इसलिए मैं आपको धर्म-सूत्र लिखकर नहीं दे सकता।''

कलिंग देश के मंत्रियों की समझ में कुछ नहीं आया। आख़िर वे इंद्रप्रस्थ के महामंत्री के पास पहुँचे। वे बोले, ''मैं एक दिन एक किसान के खेत का माप लेने गया। माप के मुताबिक़ जहाँ मुझे लकड़ी गाड़नी थी, वहाँ पर एक बिल था। मेरे मन में शंका पैदा हो गई कि उस बिल में किसी प्राणी का निवास हो सकता है। लेकिन अगर थोड़ा हटकर लकड़ी गाड़ दूँ तो किसान का नुकसान होगा! उसके थोड़ा आगे गाड़ने पर राजा का नुकसान हो सकता है! इसलिए मैंने उस बिल में ही लकड़ी गाड़ने की आज्ञा दी। उसी वक़्त बिल में से एक केकड़ा बाहर निकलते हुए लकड़ी के आघात से मर गया। इसलिए मैंने भी धर्म का अतिक्रमण किया है। ऐसी हालत में मैं आप लोगों को धर्म-सूत्र लिखकर कैसे दे सकता हूँ?''

इस पर के मंत्रियों के मन में एक उपाय सूझा। उन लोगों ने जो कहानियाँ सुनी थीं उन्हें सोने के पत्रों पर लिख कर राजा को सुनाया। राजा कालिंग ने समझ लिया कि धर्म के प्रति ईमानदार रहना ही सबसे उत्तम धर्म है। इस प्रकार आत्म विमर्श करके उन्होंने शासन करना शुरू किया। कुछ ही दिनों में पानी बरसा और राज्य भर में अकाल दूर हो गया। कलिंग देश की प्रजा सुख पूर्वक अपनी जिंदगी बिताने लगी।

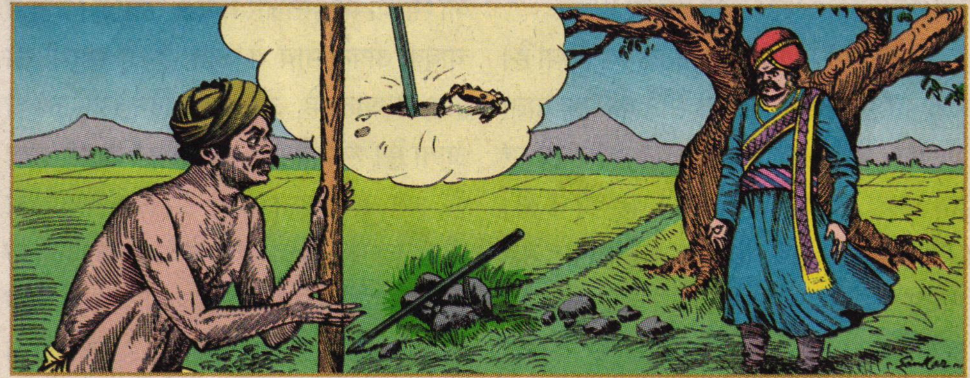

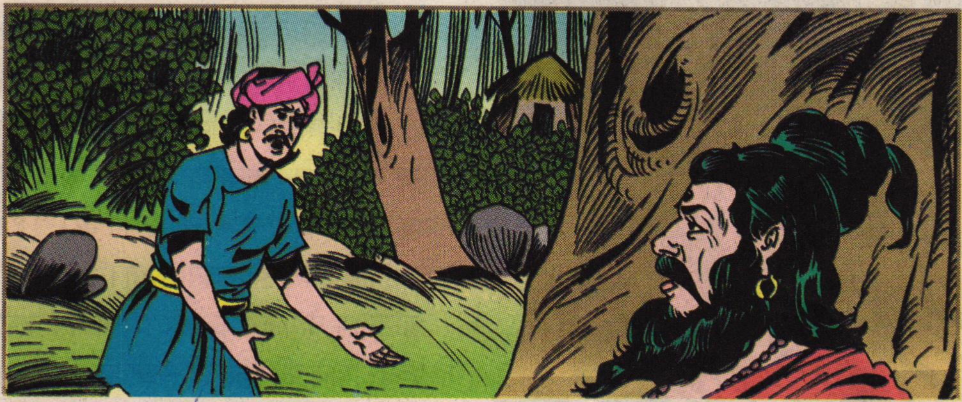

मांत्रिक की ज़िन्दगी

हरिपुर एक छोटा गाँव है। वहाँ के ज्यादातर लोग खेती करते हैं। इनके अलावा वहाँ कुलवृत्तियों में निपुण लोग भी हैं। उनके कामों के लिए आवश्यक सामग्री शहर में ही उपलब्ध होती है। इसलिए उन सभी को शहर जाना पड़ता है।

हरिपुर में तैयार होनेवाली कितनी ही वस्तुओं की शहर में अच्छी माँग है। इस हरिपुर में सोमनाथ नामक एक गरीब रहता है। न ही उसका अपना खेत है, न ही अपनी कुलवृत्ति । धनियों के घर जाता है और उनकी बागबानी का काम करता है। पत्नी सीता तरह-तरह के पकवान बनाती है और गाँव में उन्हें बेचती है। बारह साल की उम्र की बेटी रमा घर में ही रहकर रसोई बनाती है और छे साल के भाई गणपति की देखभाल करती है।

योगी आनंद एक बार अपने शिष्यों के साथ उस गाँव में आता है। वह अच्छा वक्ता है। उसका उपदेश सुनने सारा गाँव उमड़ पड़ा। आनंद ने अपने भाषण में कहा, ''स्वास्थ्य और संतृप्ति मनुष्य को सुख-संतोष प्रदान करते हैं। अपने-अपने काम स्वयं करते हुए घर में ही बने आहार-पदार्थों को खाते रहने से स्वस्थ रह सकते हैं।''

योगी की बातें लोगों को अच्छी लगीं। तब से वे सब अपने बगीचे का काम खुद करने लगे। खाने के लिए हर चीज़ घर ही में बनाने और खाने लगे। अब सोमनाथ व सीता के पास कोई काम नहीं रहा। उन्हें भूखा रहना पड़ा।

सोमनाथ समझ गया कि इसका कारक आनंद ही है। वह उससे मिला और अपना दुखड़ा बताया। योगी ने उसे ध्यान से देखने के बाद कहा, ''इस गाँव में कई ऐसे लोग हैं, जिन्होंने मेरी बातें सुनकर फ़ायदा उठाया। तुम्हारे ही साथ बुरा हुआ। ग़लती तुम्हारी है या मेरी?''

आलोक शर्मा

''स्वामी, यह गलतियों को गिनने का समय नहीं है। मैं, मेरी पत्नी और बच्चे भूख के मारे तड़प रहे हैं। इसका कारण आप हैं। आप ही को कोई ऐसा उपाय बताना होगा, जिससे हमारी भूख मिट जाए, हम फिर से खाने-पीने लगें।'' दीन स्वर में सोमनाथ ने कहा।

''देखो सोमनाथ, जनता की ज़रूरतें सदा एक समान नहीं होतीं। इतने अर्से तक तुमने सोचे-समझे बिना ज़िन्दगी गुज़ार ली। अब ही सही, सोचो, ज़िन्दगी गुज़ारने, पेट भरने के लिए नये मार्ग ढूंढ़ो।'' योगी आनंद ने सलाह दी।

उसकी इन बातों पर चिढ़ते हुए सोमनाथ ने कहा, ''पेट भर के खानेवाले आप जैसे लोग इसी तरह की बातें किया करते हैं। इन बातों से हमारे पेट की आग नहीं बुझती।''

आनंद ने हँसते हुए कहा, ''एक ज़माना था जब मैं भी कड़ी मेहनत करके पेट भरता था। क्रमशः कोई भी काम नहीं मिलने लगा। मैं साधुओं में मिल गया। जिन बातों को कहने से लोगों को आनंद मिलता है, उन्हें कहते हुए पेट भर रहा हूँ। तुम्हें भी मेरी ही तरह बदलना होगा।''

सोमनाथ ने फ़ौरन उसका शिष्य बन जाने की इच्छा प्रकट की। आनंद ने इनकार करते हुए कहा, ''सबके लिए एक ही प्रकार का मंत्र काम नहीं आता। मुझपर भी पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ हैं। अपने जीवन की राह तुम खुद ढूँढ़ लो।''

इस दौरान मैं, मेरी पत्नी और बच्चे भूख के मारे तड़प-तड़पकर मर जायेंगे।'' सोमनाथ ने दुख-भरे स्वर में कहा।

आनंद ने कहा, ''यों धीरज मत खोना। मैं आज ही गाँव छोड़कर जा रहा हूँ। टोकर मेरा शिष्य है। वह मंत्र-तंत्र जानता है। जब तक तुम्हें कोई काम नहीं मिलता तब तक वही तुम लोगों को भूख से बचायेगा।''

सोमनाथ ने जब सिर हिलाया, तब योगी ने टोकर को बुलाया। टोकर सात फुट का लंबा और मोटा भी है। बालों की जटाएँ लटक रही हैं। आँखें लाल हैं, लंबी-लंबी मूछें हैं और घनी दाढ़ी भी। उसे देखते ही लगता है कि यह अवश्य ही मांत्रिक होगा।''

आनंद ने, टोकर की पीठ को थपथपाते हुए कहा, ''मैं गाँव छोड़कर जा रहा हूँ। इसका नाम सोमनाथ है। तुम्हें पंद्रह दिनों तक इसके परिवार

की सेवा करनी होगी। बच्चे भूखे न रहें, इसकी जिम्मेदारी तुम पर है। फिर अपनी मंत्र शक्ति से मेरे पास पहुँच जाना।''

टोकर ने गुरु को सादर प्रणाम किया और फिर सोमनाथ के पीछे चल पड़ा। सीता और बच्चों ने उन्हें देखकर सोचा कि ये अवश्य ही खाने के लिए कुछ लाये होंगे। बड़ी ही आतुरता के साथ वे उनकी तरफ बढ़े। टोकर ने उनसे कहा, ''आप सब आँखें मूंद लीजिये। जो-जो खाना चाहते हैं, बताना और फिर आँखें खोलना।''

सबने आँखें मूंद लीं। सोमनाथ ने ख़ीर और पूरा माँगे। सबने जो-जो चाहा, उसका नाम लिया और आँखें खोलीं। उन्होंने देखा कि वे पकवान सोने की थालियों में परोसे हुए हैं। जैसे ही उन्होंने खा लिया, सोने की थालियाँ ग़ायब हो गयीं।

सबने टोकर की सराहना की। टोकर ने उनसे कहा, ''मैं यहाँ पंद्रह दिनों तक ही रहूँगा। इस अवधि में जीने का नया रास्ता ढूँढ़ लीजिये।''

उसकी बातें सुनते ही सोमनाथ चिंतित हो गया। उसने टोकर से कहा, ''मुझे ऐसी मंत्र शक्तियाँ सिखलाकर जाना।''

टोकर ने हँसकर कहा, ''हमें सांस लेने के लिए हवा, पीने के लिए पानी, खाने के लिए आहार चाहिये। ये सब प्रकृति के द्वारा हमें प्रदान करते हैं, महामांत्रिक भगवान। मंत्रों की महिमा से सुख से अधिक पीड़ा, असंतुष्टि ही मिलती हैं। मेरी बात मानो, और जीने के लिए नया रास्ता ढूँढ़ो।''

''क्या बता सकते हो कि मंत्र शक्तियों से

तुम्हें क्या कष्ट झेलने पड़े? कैसी असंतृप्ति तुममें है?'' सोमनाथ ने कहा।

टोकर ने शांत स्वर में कहा, ''गुरु की आज्ञा है कि मैं अपनी पीडाएँ किसी को न बताऊँ। मेरे यहाँ से जाने के पहले बता देना कि जीने के लिए तुमने कौन-से नये मार्ग ढूँढ़ लिये? तब मैं भी मंत्र शक्तियाँ तुम्हें प्रदान करूँगा।''

सोमनाथ को टोकर की बातों ने राहत दी। पर उसे संदेह होने लगना कि मंत्र सीखना कोई आसान बात नहीं है। सोमनाथ के घर के सब लोग मंत्र सीखने की प्रबल इच्छा रखते हैं। पर उनमें इसपर विश्वास नहीं है। इसलिए सोमनाथ और सीता दिन भर गाँव में घूमने लगे और जीने के नये रास्ते ढूँढ़ने लगे।

दिन यों बीतते जाने लगे। सोमनाथ ने एक

दिन टोकर से पूछा, "तुम्हारे गुरु सोमनाथ ने मुझसे बताया था कि वे पेट भरने के लिए ही योगी हुए। तुम तो मांत्रिक हो तो फिर उनके शिष्य कैसे बने?"

"आनंद महाज्ञानी हैं। तुम्हारी बुद्धि के विकास के लिए उन्होंने तुमसे ऐसा कहा। पेट भरने के लिए उनका योगी होना सच नहीं है। मांत्रिकों को स्वेच्छा नहीं होती। वे स्वतंत्र नहीं होते। वे इसके योग्य नहीं होते। अल्लाउद्दीन के अद्‌भुत दीप में जो भूत बंद था, वह स्वतंत्र नहीं था। उसकी और पाताल भैरवी की कहानियाँ तुमने सुनी ही होंगी। आनंद ज्ञानी हैं, अतः मुझे गुलाम नहीं कहते, अपना शिष्य कहते हैं। यही है, मांत्रिक का जीवन।" टोकर ने कहा।

सोमनाथ ने यह विषय पत्नी को बताया और कहा, "मुझे संदेह है कि टोकर हमें भयभीत करना चाहता है। अगर उसकी कही बात सच भी हो तो भी मैं मंत्र-तंत्र सीखूँगा और तुम सबको खुश रखूँगा। मैं अकेले तकलीफ़ें सहूँ भी तो क्या हुआ?"

सीता ने निःसंकोच कहा, "मंत्र-तंत्र सीखने के लिए कठोर दीक्षा चाहिये। बीच में साधना रोक दी जाए तो जान भी जा सकती है। इसलिए यह सोच दिमाग़ से निकाल दो।"

आख़िर, टोकर के चले जाने का दिन आ ही गया। उसने जाने के पहले सोमनाथ से कहा, "मुझे इसी बात की चिंता लगी हुई है कि मेरे चले जाने के बाद तुम लोग कैसे जीओगे।"

सोमनाथ और उसकी पत्नी सीता ने मिलकर कहा, "गाँव के लोगों को किन-किन चीज़ों की ज़रूरत है, इस बीच हमने उसकी जानकारी प्राप्त की। उन्हें हम शहर से लाकर यहाँ बेचेंगे और यहाँ तैयार की जानेवाली चीज़ें शहर ले जाकर बेचेंगे। फिर अपनी ज़िन्दगी आराम से बिताएंगे। मायावी मंत्र-तंत्रों से हमें कुछ लेना-देना नहीं है।"

टोकर उनकी बातों से बेहद खुश हुआ। सुखी जीवन बिताना हो तो परिश्रम से बढ़कर कोई अन्य मार्ग नहीं है, इसका ज्ञानोदय उनमें हुआ। इसपर प्रसन्न होते हुए उसने उनकी सराहना की। फिर गुरु आनंद से मिलने निकल पड़ा।

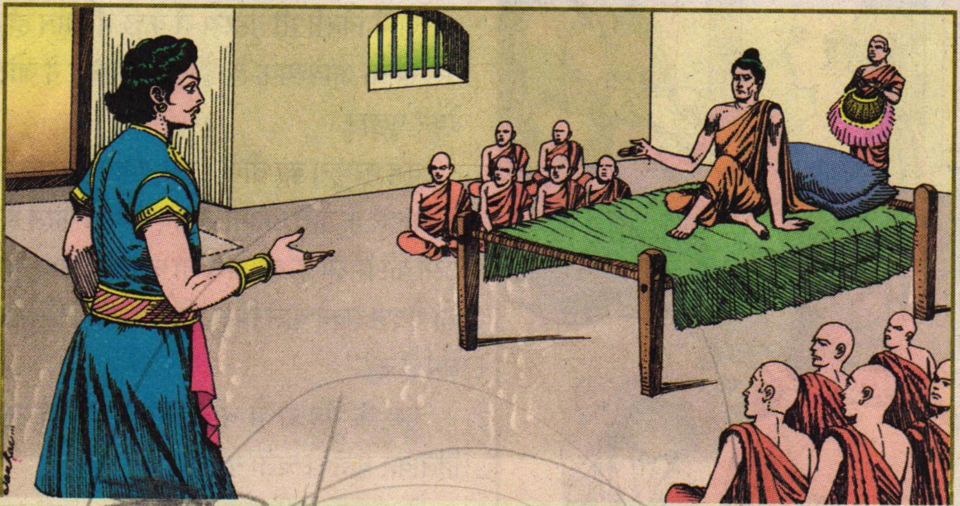

विष्णु पुराण

अहिंसा, प्रशान्त जीवन, जाति, वर्ण एवं वर्ग रहित समाज की स्थापना का प्रबोध करने वाला बौद्ध-धर्म वट-वृक्ष सा सर्वत्र फैलने लगा।

प्राणी जगत का उद्धार करने के लिए करुणामूर्ति बनकर आये हुए सिद्धार्थ 'तथागत' तथा बोधिसत्व के नाम पर भगवान की भांति गुण गान किये जाने वाले बुद्ध की महिमा हिमालय की भांति बढ़ती गई। इस के साथ बुद्ध के जन्म जात शत्रु देवदत्त की ईर्ष्या भी बढ़ती गई।

वृद्धावस्था में भी सर्वत्र भ्रमण करते हुए बुद्ध ने देखा कि समाज की निम्न जाति के लोग अग्रवर्णों द्वारा अत्याचारों तथा अपमानों के शिकार बन रहे हैं। वे उन दलित-पीड़ित लोगों को अपने उपदेशों द्वारा सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर अपने शिष्य बना रहे थे। इस से देवदत्त को बुद्ध से प्रतिकार का अच्छा अवसर मिल गया।

उसने बुद्ध के विरोधियों का संगठन करके उनका सामना किया और अनेक षडयंत्र रचे।

एक बार देवदत्त ने बुद्ध की आलोचना करते हुए उन से पूछा, "आपने अहिंसा का प्रचार किया, यह अच्छी बात है। इस से प्रभावित होकर कई लोग बौद्ध भिक्षु हुए। उनसे कहा गया कि मांसाहार वर्जित है, पर आपने इस संबंध में कोई कठोर नियम नहीं बनाया। ऐसा क्यों?"

"वत्स देवदत्त! मैंने यह अवश्य बताया है कि बौद्ध-धर्म के अनुयायियों को अहिंसा का पालन करना चाहिए। लेकिन गरीबी के कारण से कई लोगों को समय पर जो कुछ मिले, उसे खाकर मांसाहारी बने रहना पड़ता है, धनी वर्ग को आसानी से प्राप्त होने वाला बलबर्द्धक शाकाहार

निर्धन लोगों को सरलतापूर्वक उपलब्ध नहीं होता है। मानव जाति की सेवा करना ही अपना धर्म मानने वाले बौद्ध-भिक्षुओं को केवल जीने के लिए ही आहार ग्रहण करना पड़ता है। वे लोग भिक्षा मांग कर खाते हैं। पर मुझे यह आदेश देने का अधिकार नहीं है कि जो लोग भिक्षुओं को भिक्षा देते हैं, वे केवल शाकाहारी ही हों और मांसाहारी न हों। बौद्ध धर्म जाति, कुल और वर्ण-भेदों से परे है। इस प्रकार सर्व-समता का प्रबोध करने वाले बौद्ध-भिक्षु जनता के अन्दर मांसाहारी और शाकाहारी नाम से विभाजन करके भिक्षा के लिए जाना उनके सिद्धान्तों के विरुद्ध है। मैं चाहता हूँ कि बौद्ध भिक्षु विवक्षता का पोषण न करें। भिक्षा के लिए जो जाता है, उसे जो कुछ प्राप्त हो, उसे ग्रहण करना अनिवार्य है,'' बुद्ध ने समझाया।

''तो आपका कहना है कि भिक्षु को भिक्षा के रूप में किसी भी गृहस्थ से कुछ भी प्राप्त हो, उसे खाना आवश्यक है, है न?'' देवदत्त ने ज़ोर देकर पूछा।

बुद्ध मुस्कुरा कर बोले, ''जो लोग जिस प्रकार के आहार के द्वारा अपना जीवन-यापन करते हैं, उसी को भिक्षा के रूप में दें तो जाति, कुल व वर्ग का भेद न रखने वाले भिक्षु को उसे खाना भिक्षुक धर्म है न?''

बुद्ध के मुँह से ये बातें सुनकर देवदत्त सर हिलाकर वहाँ से चला गया।

देवदत्त मन ही मन सोचने लगा, 'बुद्ध का अन्त होना चाहिए वरना वह अपनी वृद्धावस्था और स्वास्थ्य का ध्यान किये बिना बौद्ध धर्म का प्रचार करते रहेंगे। हीन व निम्न जातिवालों को ज्ञानी बनाकर उनको बौद्ध धर्मावलम्बियों के रूप में परिवर्तित करते जायेंगे। दलित, पीड़ित व शोषित वर्ग के लोग प्रबुद्ध हो जाते हैं तो अग्रवर्ण लोगों का आदर न होगा। उनकी सेवा करने वाले वर्ग का अन्त हो जाएगा। इसलिए बुद्ध का अन्त कर देना चाहिये।' इस प्रकार विचार करते हुए देवदत्त जीवक के पास पहुँचा।

जीवक निम्न जाति में पैदा हुआ बुद्ध का शिष्य था। बौद्ध-धर्म के प्रति उसका सुदृढ़ विश्वास था और वह बुद्ध को भगवान मानता था।

देवदत्त ने जीवक को प्रलोभन देकर अपने पक्ष में करने के लिए कहा, ''बुद्ध जो कुछ बताते हैं, सब झूठ है। तुम्हारी जाति के लोगों को अपने पक्ष में करने के लिए वे सब मनुष्यों को समान

बताते हैं, लेकिन क्या वे तुम लोगों के जैसा जीवन बिता सकते हैं? क्या वे तुम्हारा आहार ग्रहण कर सकते हैं? मैं तो समझता हूँ कि वे ऐसा नहीं करेंगे। यदि विश्वास न हो तो उन्हें अपने घर खाने का निमंत्रण देकर देख लो।'' यों उकसा कर देवदत्त ने जीवक के दिल में विष के बीज बोये और बुद्ध को भिक्षा के लिए निमंत्रित करने की प्रेरणा दी।

जीवक ने बुद्ध से प्रार्थना की कि वे उसके घर आकर उसका आतिथ्य ग्रहण करें। बुद्ध जीवक के साथ उसके घर पहुँचे। देवदत्त प्रच्छन्न रूप से यह सब देख रहा था।

जीवक बुद्ध को अपने घर बुला तो लाया पर भिक्षा देने में संकोच करने लगा। उसे लगा कि जो कुछ वह करने जा रहा है वह उचित नहीं है। इसपर बुद्ध ने उसे समझाया, ''बेटा जीवक, तुम यह संकोच मत करो कि मेरे लिए विशेष रूप में कुछ बनाया नहीं गया है। तुम जो खाते हो, उसी में से मुझे भी थोड़ा सा दे दो। आज मैं तुम्हारी भिक्षा पर भरोसा करके आया हूँ।''

जीवक ने बुद्ध को कांपते हुए हाथों से भिक्षा दी। बुद्ध ने संतुष्टिपूर्वक उसको खाया।

पहले ही बुद्ध का स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं था। वृद्धावस्था के साथ उनकी पाचन शक्ति घट गई थी। जीवक ने बुद्ध को मांसाहार की भिक्षा दी थी।

इसके बाद बुद्ध जीवक को आशीर्वाद देकर चले गये। पर जीवक के अन्दर पाप का डर

आरम्भ हो गया। अपराधी की भांति उसका चेहरा मुरझाता जा रहा था। यह देखकर देवदत्त बुद्ध के उत्तम चरित्र पर विस्मय करने लगा और अपने द्रोह पूर्ण कार्य के लिए पछताने लगा।

बुद्ध जीवक से प्राप्त आहार खाने के अभ्यस्त न थे, इसलिए उनके लिए वह विष तुल्य हो गया और वे बीमार पड़ गये। दिन प्रतिदिन उनका स्वास्थ्य गिरने लगा और उनका अन्तिम समय निकट आ गया।

बुद्ध की शैय्या के चारों तरफ़ उन के प्रमुख शिष्य सिर झुकाये मौन हो चिन्ता में डूबे हुए थे। सारा परिसर स्तब्ध और शान्त था। उस समय अपने को अपराधी मानकर सर झुकाये लड़-खड़ाने वाले कदम बढ़ाते जीवक और देवदत्त आ पहुँचे। उनके चेहरों पर पश्चाताप झलक रहा था। वे इस प्रकार चतुर्दिक घबराई हुई दृष्टि प्रसारित

कर रहे थे, जिसमें यह भाव प्रतिबिम्बित था- भगवान, हम आप के चरण छूकर क्षमा की याचना करते हैं। अपनी करनी के लिए पछता रहे हैं, इसलिए हमें क्षमा करने की कृपा करें।

बुद्ध ने उनके अभिप्राय को समझ लिया, आँखें खोलकर प्रेमपूर्वक उन दोनों को अपने समीप बुलाया और उन्हें समझाया, ''तुम दोनों चिन्ता न करो। किसी न किसी रूप में मृत्यु निश्चित है। बस, तुम मेरे निर्वाण में सहायक बनो। तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हूँ। निर्वाण तो बाह्य नेत्रों को न दीखने वाला एक प्रकाश है। ज्योति के बुझते समय उसका प्रकाश जहाँ पहुँच जाता है, मैं भी उस निर्वाण पथ पर पहुँच रहा हूँ।''

बुद्ध के वचन सुनने पर देवदत्त के भीतर बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। उसने बुद्ध के चरण स्पर्श करने की अनुमति माँगी। बुद्ध ने उसे अपने निकट बुलाकर, उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, ''वत्स देवदत्त! जो व्यक्ति मानव के कल्याण हेतु अपनी बुद्धि का उपयोग करके श्रम करता है, वही बुद्ध है। वह बुद्ध मृत्यु से परे होता है। मानवों के उद्धार के लिए अवतरित होनेवाले सभी महात्मा बुद्ध हैं। तुमने जाति वैर को लेकर व्यक्तिगत रूप से मेरे साथ द्वेष किया, पर तुम धर्म के साथ द्वेष नहीं कर सकते। तुम मेरे साथ ही अपने द्वेष का अन्त करो। मैं अब जा रहा हूँ। इसलिए तुम यह मान लो कि तुम मेरे स्थान पर हो। हमारे भाई आनन्द, नन्द आदि, राजभोगों को त्याग कर बौद्ध भिक्षु बन गये हैं और मानव समाज की सेवा के लिए

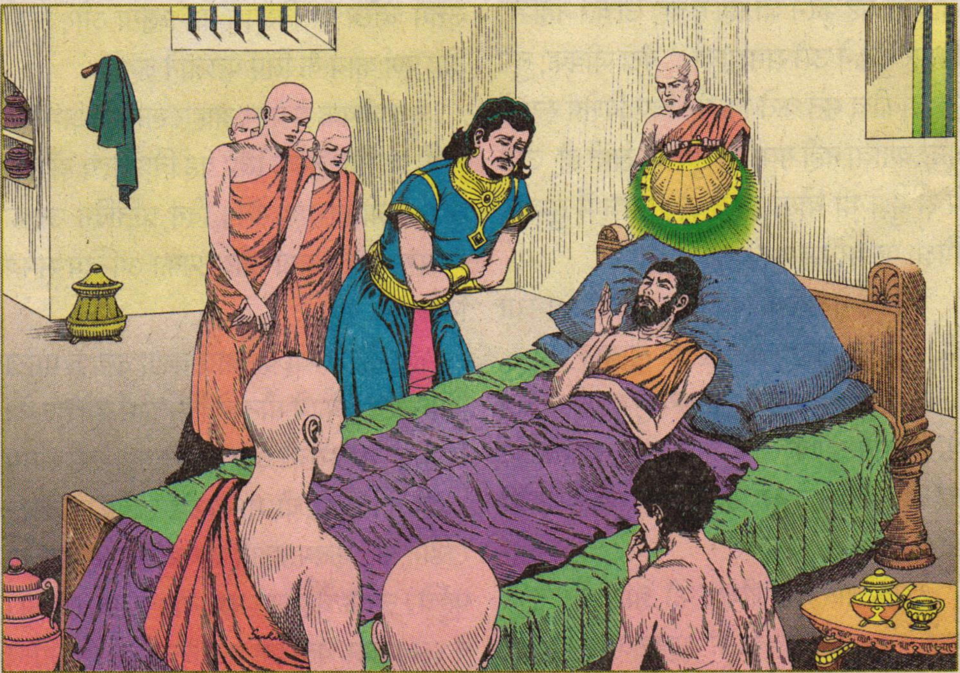

अपने को अर्पित कर चुके हैं। तुम भी मेरा अनुसरण करके बौद्ध-धर्म को स्वीकार कर उसको चारों ओर फैलाओ। बौद्ध-संघों का संचालन करो। इस कर्म के लिए तुम समर्थ व्यक्ति हो।'' यों समझाकर बुद्ध ने देवदत्त के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।

देवदत्त पुलकित हो नेत्र मूँदकर ''बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि!'' तीन बार जाप करके बोला, ''हे बुद्ध भगवान! मानव को देवता के रूप में बदल सकने वाला मार्ग दिखाकर, आपने ऐसे उच्च आदर्श वाले धर्म का प्रबोध किया जो भगवान के संबध में सोचने के लिए स्थान तक नहीं देता। इसलिए आप ही स्वयं भगवान हैं।'' यह कहकर देवदत्त ने हाथ जोड़कर बुद्ध को प्रणाम किया।

वह वैशाख पूर्णिमा का दिन था। पूर्ण चंद्रमा आकाश में सुशोभित था। पूर्व दिशा में उदित प्राण ज्योति के रूप में यश-प्राप्त बुद्ध भगवान ने निर्वाण प्राप्त किया। उनके द्वारा प्रचारित धर्म, उपदेश, सूत्र आदि बौद्ध धर्म के रूप में रूपायित हुए। बुद्ध भगवान एक अवतार पुरुष के रूप में माने गये।

महर्षि सूत ने इस प्रकार बुद्धावतार की कथा समाप्त की। फिर दशावतारों में अन्तिम 'कल्कि अवतार' के बारे में सुनाना आरम्भ किया।

सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग- ये चारों मिलकर एक महायुग कहलाते हैं। प्रत्येक महायुग के अन्त में कलियुग के अन्तिम चरण में जब

कलि का प्रभाव बढ़ जाता है, तब सारा विश्व संकट में फंस जाता है।

उस युग में जहाँ एक ओर भ्रम होने लगता है कि 'ईश्वर है कि नहीं' तो दूसरी तरफ यह सन्देह भी पैदा होने लगता है कि 'क्या मानव सचमुच मानव है?' ऐसा काल है यह!

मानव समाज छिन्न-भिन्न हो जाता है। जाति-विद्वेष, अत्याचार, दमन-नीति, हिंसा आदि दुर्गुण बढ़ जाते हैं।

शासकों का व्यवहार अन्यायपूर्ण हो जाता है। एक-दूसरे को लूटना ही अपने जीवन का लक्ष्य मान कर मनुष्य खूंख्वार जानवरों से कहीं अधिक गये बीते होते जा रहे हैं।

मेधावियों की मेधा विश्व के ध्वंस का कारणभूत होती जा रही है। करोड़ों लोगों को एक साथ मिटा सकने वाले साधन निर्मित हुए हैं।

प्रकृति के धर्म अस्त-व्यस्त होते जा रहे हैं। पृथ्वी माता विलाप कर रही हैं।

ऐसे संकट काल में विष्णु यह अनुभव करते हैं कि दुष्टों का दमन कर शिष्ट जनों की रक्षा के लिए दण्ड के अतिरिक्त कोई और उपाय नहीं है। इस विचार से वे कल्कि के रूप में अवतार लेते हैं। वही कल्कि का अवतरण है।

शिवजी अपने अंश से एक श्वेत अश्व की परिकल्पना करके कल्कि मूर्ति को प्रदान करते हैं। वह महा अश्व कालगति से अधिक तीव्र वेग से सफेद धुँए को निश्वास के रूप में छोड़ते और धूमकेतु की भांति आकाश में प्रयाण करते हुए अन्य ग्रहों की ओर दौड़ जाता है।

उस अश्व पर कल्कि आरूढ़ होकर आसमान का स्पर्श करने वाला लम्बा खड्ग धारण करके दुष्ट जनों का संहार करने के लिए चल पड़ते हैं। प्रलयकालीन मेघ-खंडों के भीतर की विद्युत से बनी तलवार बिजली की भांति आसमान से पृथ्वी तक फिसलते हुए दुष्टों का संहार कर देती है।

कल्कि विभिन्न देशों में विभिन्न रूपों में दर्शन देते हुए अपने अवतार का कार्य संपन्न कर देते हैं। भूदेवी (पृथ्वी माता) कल्कि के अवतार विष्णु की आरती करके अनेक प्रकार से उनकी स्तुति करने लगती है, तब ब्रह्मा आदि देवता तथा सप्त ऋषि फूलों की वर्षा करते हुए उनकी प्रार्थना करने लगते हैं। नारदमुनि महती वीणा पर सामगान का आलाप करते रहते हैं।

कल्कि स्वयं पृथ्वी पर अत्याचार, अधर्म, अन्याय आदि का अन्त करके मानव समाज को भिन्नता में से एकता और शांतिपूर्ण सह जीवन की ओर अग्रसर कराते हैं, तब सतयुग का पुनः बीजारोपण हो एक और महायुग का शुभारंभ होता है। तब विष्णु अपने कल्कि के स्वरूप को वापस लेकर विश्व में सर्वत्र व्याप्त हो जाते हैं और विश्व स्थिति के लिए मूलभूत बनकर रह जाते हैं। विष्णु ही आदि हैं और विष्णु ही अन्त। संसार का जन्म उनसे ही होता है, उसका पालन-पोषण वहीं करते हैं, और उसका अन्त भी वही। यों प्रकाश डालकर सूत महर्षि ने दशावतारों के लिए प्रमुख बने विष्णु का पुराण समग्र रूप से संपूर्ण किया। ***(समाप्त)***

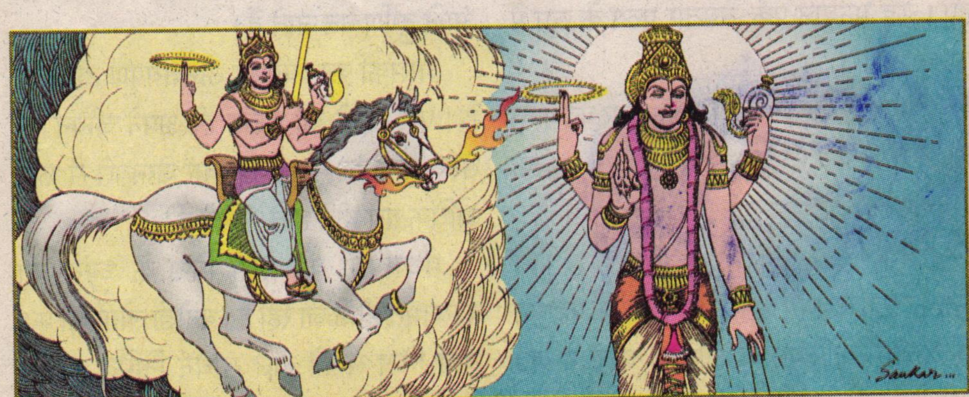

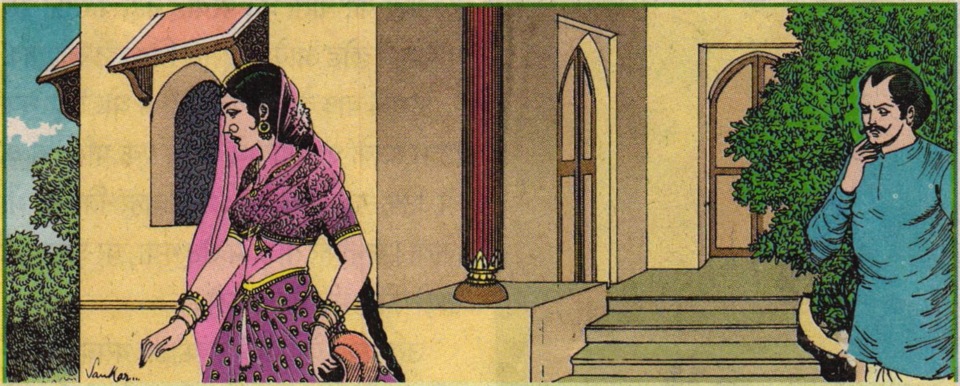

4/5

बुद्धिमत्ता

रत्नाकर नंदनपुर का एक बड़ा व्यापारी था। उसका इकलौता बेटा अजित सेन था। चित्रावती नगर के एक धनाढ्य की पुत्री शीलवती अत्यंत ही सुंदर, गुणवती तथा बुद्धिमती थी। यह समाचार मिलते ही रत्नाकर ने अपने पुत्र अजित सेन के साथ शीलवती का विवाह किया। शीलवती की सुंदरता और बुद्धिमत्ता पर अजित सेन मुग्ध था। पर रत्नाकर अपनी बहू पर निगरानी रखे हुए था।

एक दिन आधी रात को शीलवती एक खाली घड़े को लेकर घर से निकल पड़ी और बड़ी देर बाद खाली हाथ घर लौट आई। इसे देख रत्नाकर ने सोचा कि उसकी बहू बड़ी साहसी है, ऐसी युवती दोनों परिवारों के अपयश का कारण बन सकती है। फिर क्या था, दूसरे दिन रत्नाकर ने अपने पुत्र से कहा, ''बेटा, थोड़े दिन के लिए तुम अपनी बहू को उसके मायके भेज दो।'' अजित सेन शीलवती को मायके भेजने के पक्ष में नहीं था। इसलिए उसने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, लेकिन साथ ही, पिता का खुलकर विरोध भी नहीं किया।

इसके उपरांत अपनी बहू को मायके भेजने की ज़िम्मेदारी रत्नाकर ने स्वयं अपने ऊपर ली और उसे साथ लेकर घर से चल पड़ा। रास्ते में एक नाला पड़ा। रत्नाकर ने अपनी बहू को समझाया कि चप्पल उतार कर हाथ में ले नाला पार करे। पर बहू ने चप्पलों के साथ ही नाला पार किया। बहू ने उसकी बात न मानी, इस पर रत्नाकर को दुःख तो हुआ, मगर उसने प्रकट रूप से कुछ नहीं कहा।

थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर पकी फ़सल का एक खेत देख रत्नाकर बोला, ''वाह, बहुत ही बढ़िया फ़सल हुई है। इस खेत के मालिक को इस साल बड़ा लाभ होगा!''

''सारी फ़सल खा न डाले तब न?'' बहू ने

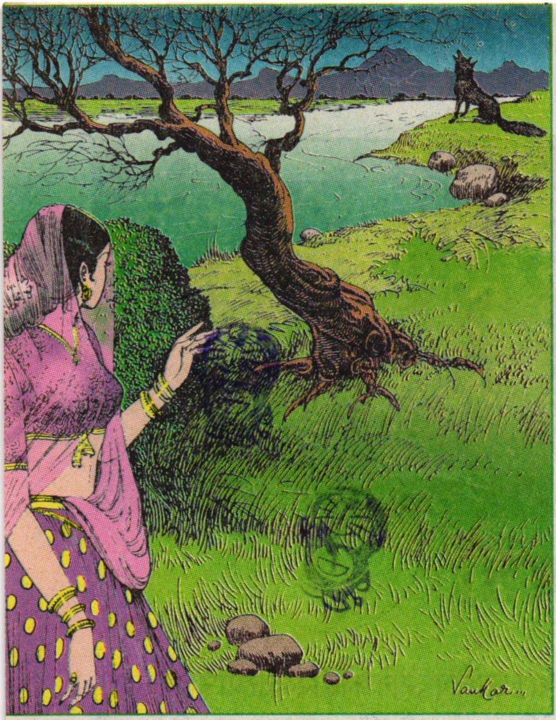

झट से कह दिया। रत्नाकर कों इस बात का आश्चर्य हुआ कि उसकी बहू बेतुके जवाब देती है। लेकिन लोग उसे अक़्लमंद और बुद्धिमती कैसे मानते हैं?

फिर दोनों आगे बढ़े। जब वे एक नगर से होकर जाने लगे, तब उसकी सुंदरता पर मुग्ध हो रत्नाकर बोला, ''ओह, यह नगर कितना सुंदर है!''

''दुश्मन अगर इसे उजाड़ न डाले तो!'' शीलवती ने तपाक से जवाब दिया।

थोड़ी दूर की यात्रा के बाद रत्नाकर थक गया और रास्ते में एक बरगद की छाया में आराम करने के लिए बैठ गया। शीलवती पेड़ से दूर जा बैठी।

रत्नाकर ने सोचा, 'यह तो जिद्दी और मूर्खा है। बड़ों की बातों की परवाह नहीं करती। इसे मायके में छोड़ आने पर इससे पिंड छूट जाएगा।'

इसके बाद वे एक बैलगाड़ी में थोड़ी दूर तक यात्रा करके एक गाँव में अपने एक परिचित के घर टिक गये। भोजन करके बाहर विश्राम भी किया। रत्नाकर गाड़ी में लेट गया, पर शीलवती गाड़ी की छाया में जा बैठी।

उस वक़्त पेड़ पर बैठा कौआ बराबर काँव-काँव करने लगा। इसपर शीलवती बोली, ''हे कौए! तुम क्यों चिल्लाते हो? एक भूल करके मुझे घर छोड़ना पड़ा, दूसरी भूल कर बैठूँ तो शायद मैं अपने पति को चेहरा दिखाने लायक़ न रहूँगी।''

ये बातें सुन रत्नाकर आश्चर्य में आ गया। गाड़ी से उतरकर बहू के पास पहुँचा और पूछा, ''बहूरानी! तुम्हारी इन बातों का क्या मतलब है?''

''पिताजी! क्या बताऊँ? सुगंध होने के कारण ही चन्दन को लोग घिस देते हैं। इसी प्रकार मेरे विशेष गुण ही मेरे दुश्मन बन बैठे हैं। मैं पक्षियों तथा जानवरों की बोली जानती हूँ।'' शीलवती ने जवाब दिया।

रत्नाकर ने सोचा कि शायद उसकी बहू पागल है, पर शीलवती कहती ही गई- ''कुछ दिन पूर्व अर्द्ध रात्रि के समय एक मादा सियार चिल्ला रही थी कि नदी में एक औरत की लाश बही जा रही है। उस लाश में कई गहने हैं। यह आवाज़ सुनकर मैं खाली घड़ा ले नदी पर पहुँची। लाश को पानी में से बाहर निकाला, उसके आभूषण निकालकर घड़े में भर दिया। उस घड़े को एक

जगह गाड़ दिया, तब लाश को सियार के खाने के लिए छोड़ मैं घर लौट आई। यह छोटी-सी भूल करने के कारण ही मैं आप की शंका का कारण बनी और इस हालत में पहुँची हूँ।''

यह जवाब सुनने पर रत्नाकर को आश्चर्य हुआ और साथ ही अपनी बहू पर दया भी आ गई। शीलवती ने आगे कहा, ''पर देखिए, पशु और पक्षियों की मुझ पर बड़ी कृपा है। वह कौआ तब से चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है कि इस पेड़ के नीचे ख़ज़ाना गड़ा हुआ है।''

उसी वक़्त रत्नाकर ने उस पेड़ के नीचे जाकर गड्ढा खोदा। उसे भारी ख़ज़ाना मिला। रत्नाकर के मन में अपनी बहू के प्रति अपार विश्वास और आदर का भाव पैदा हो गया। उसने शीलवती से कहा, ''बेटी! मैं तुम्हें ठीक से समझ न पाया। इस बात का मुझे दुख है, अब चलो, घर चलें।''

लौटती यात्रा आराम से हुई। रास्ते में जब वही बरगद का पेड़ दिखाई दिया, तब रत्नाकर ने पूछा, ''तुम अपने मायके जाते वक़्त बरगद की छाया में क्यों नहीं बैठी?''

बहू ने जवाब दिया, ''बरगद के खोखले में सांप होते हैं और पेड़ पर बैठे पक्षी मल गिराते हैं।'' रत्नाकर ने हँसकर कहा, ''हाँ, तुम ठीक कहती हो।''

इसके बाद शहर आ पड़ा। तब शीलवती स्वयं बोली, ''इस नगर में यात्रियों की सुविधा के लिए एक भी सराय नहीं है। इसलिए यह बड़ी आसानी से दुश्मन के हाथों में चला जाएगा।''

इसके बाद पकी फ़सल का खेत आया, तब शीलवती ने कहा, ''इस खेत का मालिक अपनी फ़सल बेचकर धन का सदुपयोग करेगा, तभी सचमुच उसे लाभ पहुँचेगा।''

फिर थोड़ी दूर जाने पर नाला आ पड़ा। शीलवती बोली, "नाले में पत्थर होते हैं और जीव-जंतु भी। इसलिए पानी में चलते वक़्त अवश्य ही चप्पल पहनना चाहिए।" इस पर रत्नाकर ने अपनी बहू की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की।

घर लौटते ही घर की ज़िम्मेदारी शीलवती को जब रत्नाकर ने सौंप दी, तब अजितसेन ने भांप लिया कि शीलवती रत्नाकर के विश्वास का पात्र बन गई है।

उस समय उस देश का राजा नये मंत्री की नियुक्ति करना चाहता था। उसने देश के अनेक मेधावियों को बुला भेजा और उनसे मंत्रणा करने लगा।

इसी बात की गोष्ठी चल रही थी और उनकी परीक्षा ली जा रही थी। अजित सेन भी अपनी पत्नी के साथ राजधानी पहुँचा और राजा की धर्मशाला में जा ठहरा। राजा ने अचानक मेधावियों से पूछा- "जो राजा पर लात मारता है, उसे कैसा दण्ड देना चाहिए?"

सब मेधावी राजा की प्रशंसा प्राप्त करने के ख़्याल से जवाब दे रहे थे कि इस राजद्रोह पर उसे कठिन दण्ड देना चाहिए। कोई कह रहा था कि उस अपराधी का शिरच्छेद करना चाहिए।

अजितसेन दर्शकों के बीच बैठा यह सब सुन रहा था। उसी वक़्त वह धर्मशाला में दौड़कर पहुँचा और शीलवती को राजा का सवाल सुनाया।

शीलवती ने अजित सेन को समझाया, "राजा पर कौन लात मारेगा? शृँगार चेष्टा के समय पत्नी लात मारेगी या उसकी गोद में खेलते हुए बच्चे लात मारेंगे। इसका दण्ड यह है कि उनके साथ और अधिक प्यार करना चाहिए।"

अजित सेन ने दरबार में लौटकर देखा कि लोग और तरह तरह के सुझाव दे रहे हैं।

थोड़ी देर बाद सब को मौन देख अजित सेन बोला, "महाराज! राजा को लात मारनेवालों के प्रति और अधिक प्यार करना चाहिए।"

फिर क्या था, अजित सेन को मंत्री का पद प्राप्त हो गया। इसके बाद शीलवती की मदद से राजा को अनोखी सलाहें देते हुए अजितसेन बड़ा मेधावी मंत्री कहलाया।

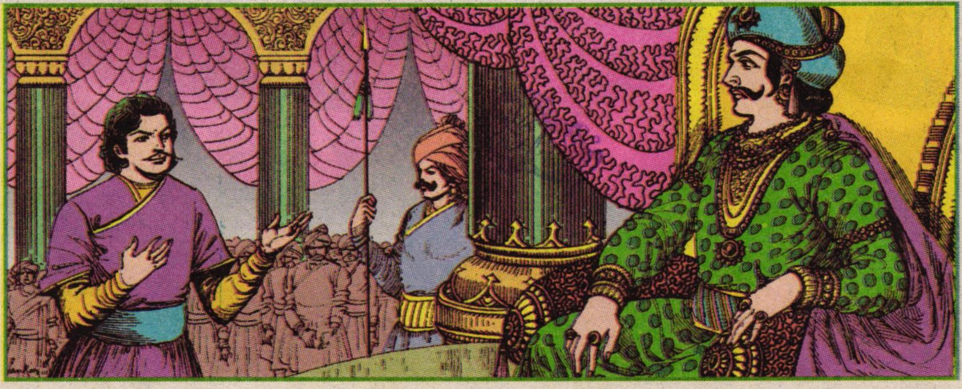

संगीत और नृत्य का मौसम

प्रत्येक वर्ष मध्य दिसम्बर से तीन महीनों तक तमिलनाडु में कानों और आँखों के लिए एक वास्तविक उत्सव रहता है, जब संगीत और नृत्य के त्योहार जगमगाती लड़ी की तरह आयोजित होते हैं। महीना भर चलनेवाला **मरगढ़ी पर्व** चेन्नई में मनाया जाता है जब दो हजार से अधिक संगीतज्ञ और नर्तक २० भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित लगभग ३०० संगीत-समारोहों में भाग लेते हैं। मध्य जनवरी में, कर्नाटक संगीत के तीन महान कलाकारों में से एक संत त्यागराज का जन्म दिन मनाया जाता है। **त्यागराज आराधना** उत्सव सन्त के जन्म-स्थान तिरुवैयारु, तन्जौर में आयोजित किया जाता है, जहाँ सैकड़ों कर्नाटक संगीतकार सामूहिक गायन के लिए एकत्र होते हैं।

मामल्लापुरम पर्व महाबलीपुरम में अब तक आरम्भ हो गया होगा। भरतनाट्यम, कुचिपुडी, ओडिसी, कत्थक और कथकली के प्रतिपादक विश्वप्रसिद्ध एकाश्म समुद्रतटीय मन्दिरों की पृष्ठभूमि के साथ निर्मित खुले रंगमच पर देखे जाते हैं। यह उत्सव मध्य फरवरी तक चलता है। इसके बाद आता है चिदम्बरम में आयोजित **नाट्यांजलि पर्व**, जहाँ का प्रसिद्ध मन्दिर भगवान शिव, ब्रह्माण्डीय नृत्यकार को निवेदित है। नृत्यमुद्रा में भगवान शिव की कांस्य प्रतिमा से आकृष्ट होकर भारत तथा विदेश के भक्त और पर्यटक सालो भर आते रहते हैं। यह पर्व, जो शिवरात्रि से आरम्भ होकर एक महीने तक रहता है और जिसमें भारत भर के नृत्यकार भाग लेने आते हैं, मन्दिर के गर्भ गृह के आसपास ही आयोजित होता है, और प्रदर्शन करनेवाले कलाकार समझते हैं कि स्वयं भगवान ने उन्हें अपने आशीर्वाद देकर धन्य कर दिया है।

मामल्लापुरम तथा नाट्यांजलि पर्वों का आयोजन तमिलनाडु के पर्यटन विभाग द्वारा किया जाता है।

CHANDAMAMA HAS LOTS OF GOOD STORIES WITH MORAL VALUES AND USEFUL INFORMATION. (from Sharjah)

WORDS CANNOT DESCRIBE HOW GOOD CHANDAMAMA IS. IT IS A GEM OF A MAGAZINE. (from W.Bengal)

THE MAGAZINE HAS SUPER SENSATIONAL STORIES. (from Karnataka)

CHANDAMAMA IS A SOURCE OF ENJOYMENT. HOPE IT WILL CONTINUE TO ENTERTAIN MANY GENERATIONS OF YOUNG PEOPLE. (from Orissa)

THAT'S WHAT OUR READERS SAY.

WHY DON'T YOU FIND OUT FOR YOURSELF?

FOR SUBSCRIPTION DETAILS PLEASE SEE PAGE 4

सुम्बा निवासी, प्रत्येक वर्ष फरवरी और मार्च में पूर्णिमा के बाद सातवें और आठवें दिन बहुरंगी समुद्री कीड़ों को एकत्र करने के लिए समुद्र में जाते हैं। जानते हो, क्यों? पढ़िये यह कथाः

राजकुमारी का बलिदान

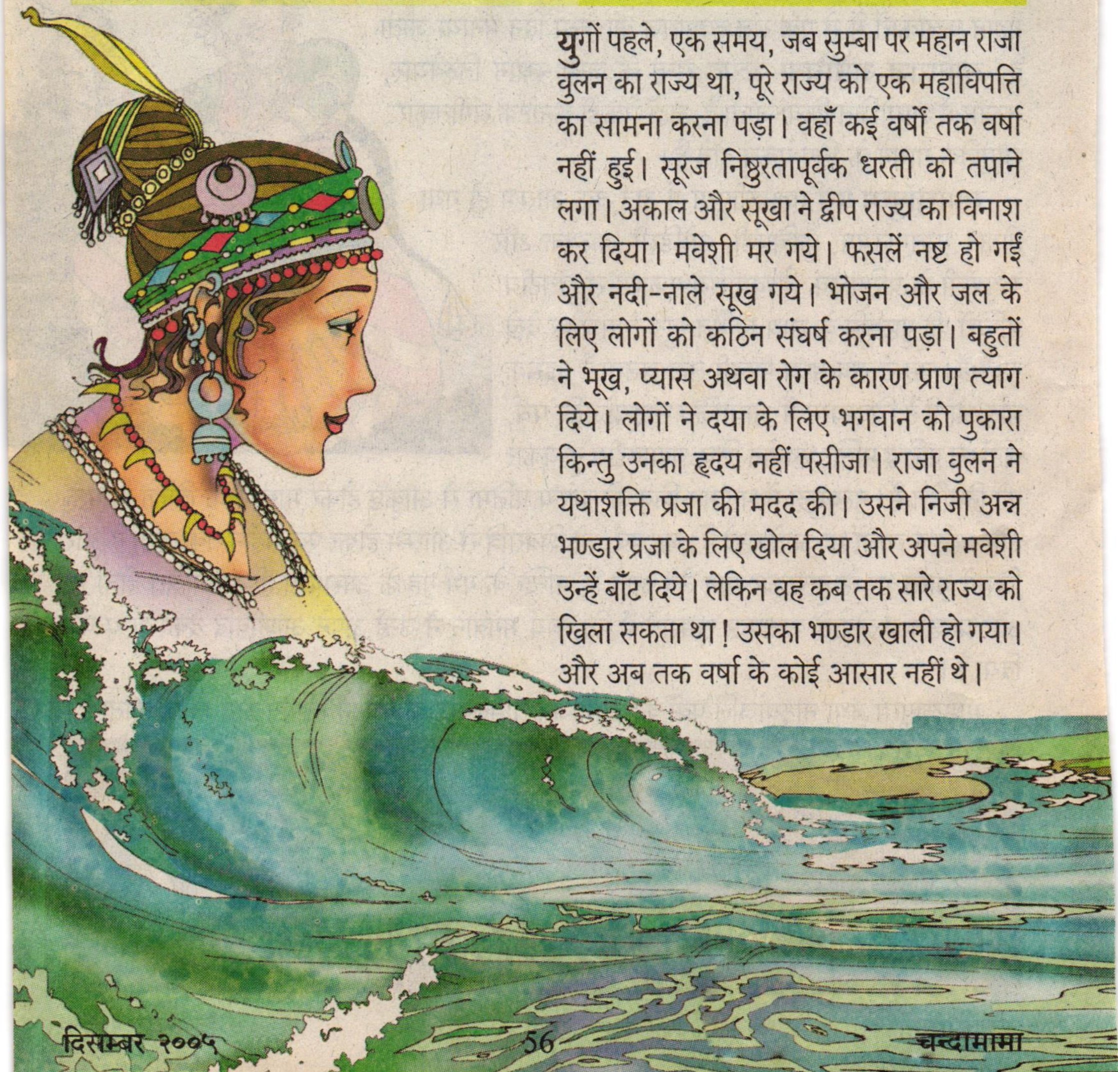

युगों पहले, एक समय, जब सुम्बा पर महान राजा वुलन का राज्य था, पूरे राज्य को एक महाविपत्ति का सामना करना पड़ा। वहाँ कई वर्षों तक वर्षा नहीं हुई। सूरज निष्ठुरतापूर्वक धरती को तपाने लगा। अकाल और सूखा ने द्वीप राज्य का विनाश कर दिया। मवेशी मर गये। फसलें नष्ट हो गईं और नदी-नाले सूख गये। भोजन और जल के लिए लोगों को कठिन संघर्ष करना पड़ा। बहुतों ने भूख, प्यास अथवा रोग के कारण प्राण त्याग दिये। लोगों ने दया के लिए भगवान को पुकारा किन्तु उनका हृदय नहीं पसीजा। राजा वुलन ने यथाशक्ति प्रजा की मदद की। उसने निजी अन्न भण्डार प्रजा के लिए खोल दिया और अपने मवेशी उन्हें बाँट दिये। लेकिन वह कब तक सारे राज्य को खिला सकता था! उसका भण्डार खाली हो गया। और अब तक वर्षा के कोई आसार नहीं थे।

राजा चिन्तित था। 'अपनी प्रजा को कष्ट में देख कर मुझे बहुत पीड़ा होती है। मुझे इसके लिए कुछ करना पड़ेगा।' उसने सोचा।

उसने अपने निकटतम सलाहकारों को बुलाया और उनसे पूछा कि प्रजा की सहायता के लिए उसे क्या करना चाहिये। लेकिन वे लोग स्वयं इतने थके माँदे थे कि वे कुछ सलाह न दे सके।

"भगवान हमसे नाराज़ हैं," बार-बार वे यही कहते रहे। "हम सब ने पाप किया होगा। हम उसी पाप का फल भोग रहे हैं।"

"यदि भगवान हमें सजा देना चाहते हैं तो हमें स्वीकार कर लेना चाहिये। यदि वे हमारा विनाश करना चाहते हैं तो हम उससे बच नहीं सकते।" एक वयोवृद्ध व्यक्ति ने दुख के साथ कहा। सब लोगों ने हाँ में हाँ मिलाया और फिर उठकर चले गये।

लेकिन राजा वुलन सन्तुष्ट नहीं था। उसने इस समस्या पर महीनों विचार किया । उसकी इस परेशानी से उसकी बेटी रातू न्याले को यह चिन्ता हुई कि राजा परेशानी के कारण कहीं रोगग्रस्त न हो जायें। रातू न्याले राजा की आँखों की तारा थी। और वह भी अपने पिता को दुनिया की हर चीज़ से ज्यादा प्यार करती थी। उसने अपने पिता को समस्या का समाधान करने में सहायता करने का निश्चय किया।

"मेरे सब रत्न, हीरे, मोती और मूल्यवान परिधान ले लीजिये और उनसे प्रजा के लिए भोजन का प्रबन्ध कर दीजिये।" रातू ने सलाह दी।

"नहीं मेरे बच्चे," राजा ने प्यार से समझाया। "सुम्बा में तुम्हारे रत्नों से खरीदने के लिए अन्न नहीं है और हमारे लोग इतने कमज़ोर और थके-माँदे हैं कि भोजन की तलाश में इस द्वीप से बाहर जाना नहीं चाहते। तुम्हारे हीरे-मोतियों से हमारी समस्या का समाधान नहीं होगा।"

"सहायता के लिए आप भगवान से प्रार्थना क्यों नहीं करते?" न्याले ने पूछा।

"लेकिन किसी कारण से भगवान ही तो हम लोगों से नाराज़ हैं। वे ही तो हमें सजा दे

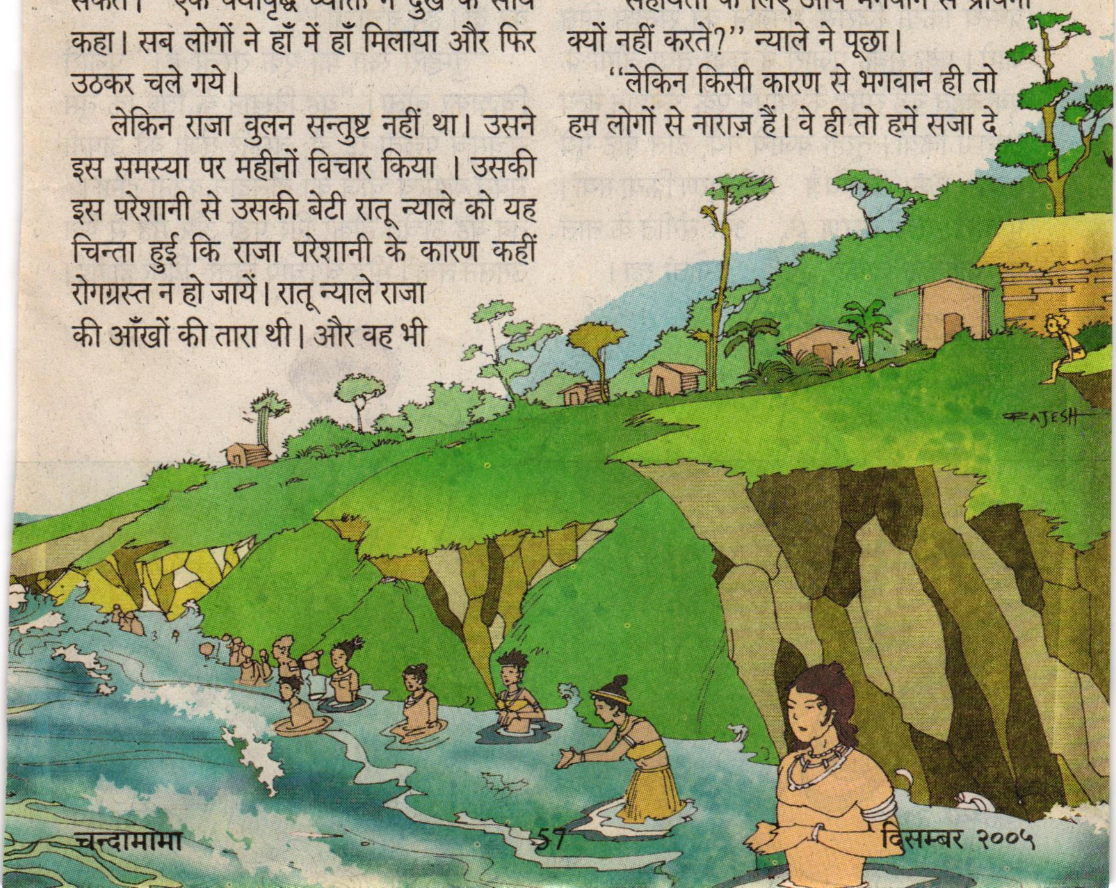

रहे हैं । फिर उनसे मदद की आशा हम कैसे कर सकते हैं?'' पिता ने कहा।

''उनसे माफी माँग लें और उनसे पूछें कि हम अपने पापों के प्रायश्चित के लिए किस प्रकार की तपस्या करें। वे निश्चित रूप से हमें क्षमा कर देंगे।'' न्याले ने सलाह दी।

राजा वुलन को यह विचार पसन्द आया। उसने प्रधान पुजारी को बुलाया। ''हमें यह पता करना चाहिये कि हम किस पाप का मूल्य अपने और अपने बच्चों के प्राण देकर चुका रहे हैं और यह भी कि हम अपने पापों का प्रायश्चित कैसे करें जिससे भगवान फिर से हम पर प्रसन्न हो जायें।'' राजा ने पुजारी से कहा।

प्रधान पुजारी ने तुरन्त एक ऐसे उत्सव का प्रबन्ध किया जिससे भगवान का सन्देश मिल जाये। एक सुबह पुजारी ने राजा तथा लोगों के एक बहुत बड़े समूह के सामने एक अनुष्ठान नृत्य आरम्भ किया। तूरही बजाये गये, ढोल पीटे गये तथा एक विचित्र मंत्रोच्चारण किया गया। पुजारी मंत्रोच्चारण और संगीत के ताल पर चक्कर पर चक्कर लगाता रहा।

संगीत का ताल तीव्र हो गया। पुजारी अपने कदम फिर भी मिलाता रहा। तब गति पराकाष्ठा पर पहुँच गई। पुजारी एक विचित्र भावातिरेक में चला गया। वह नियन्त्रण से बाहर हो गया। वह उन्माद में नाचने लगा। जब उन्माद पराकाष्ठा पर बढ़ गया तब वह रोंगटे खड़ा करनेवाली चीख के साथ गिर पड़ा। वह किसी शक्ति द्वारा अधिकृत था।

एक विचित्र कर्णभेदी आवाज़ में वह चीखता हुआ बोला, ''तुमने पाप किया है, हे सुम्बा की प्रजा! तुम्हें अपने पापों का मूल्य चुकाना होगा।''

लोग भय से पीछे हट गये। वे ज़मीन पर गिर कर बार बार अपना सिर पटकने लगे। ''दया करो, प्रभु!'' वे पुकारने लगे। ''हमारे पापों को माफ कर दो। हमें बचाओ।''

''तुम्हारी रक्षा का एक रास्ता है।'' पुजारी चिल्लाकर बोला। ''यह दिखाने के लिए कि तुम सचमुच पछता रहे हो, तुम्हारे राजा को अपनी सबसे बहुमूल्य चीज़ का बलिदान करना होगा।'' तब वह अचेत होकर गिर पड़ा और मुँह से फेन उगलने लगा। भीड़ चुपचाप तितर-बितर हो गई।

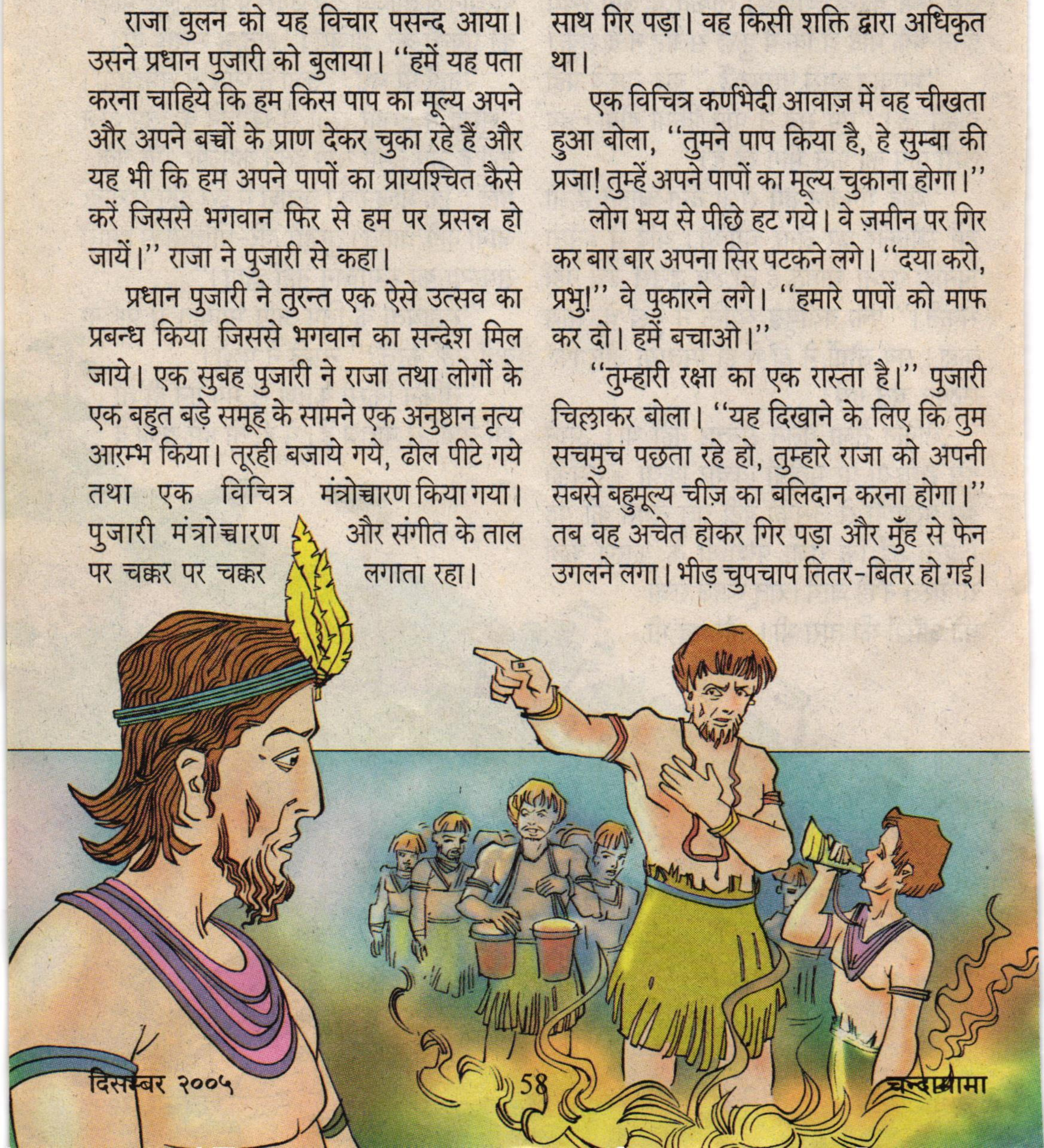

कैसा धर्मसंकट था? सबको मालूम था कि राजा अपनी बेटी को सबसे अधिक प्यार करता है। पर उसे कौन कहता कि उसे अपनी बेटी का बलिदान कर देना चाहिये?

राजा सर नीचा कर महल में चला गया। वह अपनी सबसे प्यारी बेटी न्याले की बलि कैसे दे दे? फिर भी, क्या अपनी प्रजा के कल्याण के लिए कुछ करना उसका कर्त्तव्य नहीं है?

न्याले की सहेलियों ने उसे उत्सव में जो हुआ बता दिया। वह अपने पिता की वेदना समझ सकती थी। वह एक उदार-हृदय और साहसी लड़की थी। 'यदि मेरे जीवनदान से बहुतों के प्राण बच सकते हैं तो मुझे क्यों नहीं करना चाहिये?' उसने सोचा।

"पिता, आप हमें भगवान को अर्पित कर दीजिये। मैं अपनी प्रजा के लिए प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दूँगी।" न्याले ने कहा।

राजा वुलन की आँखों से आँसू छलक पड़े। "मेरी बेटी", वह फूट-फूट कर रोने लगा। "मैं तुम्हें इस तरह कैसे त्याग दूँ?"

लेकिन न्याले के हठ के सामने पिता को झुकना पड़ा। बलिदान के लिए एक शुभ दिन निश्चित किया गया। सुम्बा की प्रजा अनुष्ठान के रूप में शोभायात्रा बना कर समुद्र तट पर गई जहाँ से न्याले को गहरे समुद्र में फेंककर बलि दी जाती। न्याले उस दिन पहले से कहीं अधिक सुन्दर दिखाई पड़ रही थी। जैसे ही मुख्य पुजारी ने प्रार्थना का मंत्रोच्चारण किया, राजा वुलन ने अपने कांपते हाथों से अपनी बेटी को भूखे सागर में धकेल दिया। वह अदृश्य हो गई। आकाश से एक वाणी सुनाई पड़ी, "तुम महान हो राजा वुलन। मैं प्रसन्न हूँ। तुम्हारी प्रजा जीवित रहेगी। और तुम्हारी बहादुर बेटी न्याले प्रतिवर्ष दो बार अपनी मातृभूमि में आयेगी। तुम्हें उसका सम्मान करना होगा।"

और तब से प्रतिवर्ष सुम्बा के तट पर बहुरंगी कीड़े समुद्र से आ जाते हैं। लोगों का विश्वास है कि उनकी उदार राजकुमारी ही लौट कर यह देखने आती है कि वे खुश हैं कि नहीं। वे कीड़ों को एकत्र कर उदार रातू न्याले की स्मृति को सम्मान प्रदान करते हैं।

30
वीरसिंह के दुखद रूप से लोप हो जाने से राजकुमार आर्य के शान्तिपुर की राजगद्दी पर बैठने का मार्ग साफ हो जाता है। जयानन्द की सलाह पर सरदार सुखदेव महल में जाकर स्थिति पर पूरी तरह नियन्त्रण रखता है। उसका एक अंग रक्षक जल्दी में उसे अलग ले जाता है।
आर्य
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
वीरसिंह के सैनिक विद्रोह की योजना बना रहे हैं, महाराज!
बकवास!
सुखदेव तेजी से महल के बाहर आता है।
मैंने तुम्हें कह दिया कि वीरसिंह मर चुका है। अब राजकुमार आर्य का स्वागत करने के लिए तैयार हो जाओ। वह सिंहासन का सच्चा दावेदार है।
मैं चेतावनी देता हूँ। यदि तुमने कोई चाल चली तो तुम्हें अपनी दुष्टता के लिए भारी कीमत चुकानी होगी। मेरे सैनिक किसी भी आपतकाल का सामना कर लेंगे।
यदि तुम्हें सन्देह है तो अपने पीछे देखो!
आश्चर्य है!
इतने सारे!

वीरसिंह के सैनिक और जबरसेन महसूस करते हैं कि स्पष्ट रूप से उनकी संख्या बहुत कम है।
बेहतर होगा कि हम सब सरदार के आदेश का पालन करें।
अपने-अपने स्थान पर वापस चले जाओ।
हम राजकुमार आर्य की सेवा करेंगे चाहे वह कोई भी हो।
दूसरे दिन सुबह, आश्रम में...
बाबा, मुझे आशीर्वाद दीजिये!
आर्य! मेरे पुत्र..
तुम्हारे जीवन में आज एक महान दिवस है। तुम अपने वंश से अज्ञात रहकर यहाँ पले हो।
मैं हर चीज़ के लिए आप का आभारी हूँ।
आर्य, तुम प्रकृति माता की गोद में बड़े हुए हो... आज तुम एक बड़े संसार में कदम रखने जा रहे हो... इस राज्य की प्रजा के बीच अपना स्थान ग्रहण करने के लिए...
बाबा, मैं आप के बिना अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकता।

आर्य, जब भी मेरी ज़रूरत होगी, मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगा। अब तुम अपने माता पिता को प्रणाम कर लो।
मैं बाद में आप के पास आता हूँ।
आर्य अपने माता-पिता की समाधि पर जाता है।
आर्य अपनी माँ की समाधि के पास बैठते समय अपने ऊपर नियन्त्रण नहीं रख पाया।
कृपया अपने बेटे को आशीर्वाद दीजिये!
आर्य अपने दोनों ओर बाघा और बाघी को देखता है।
मैं तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं जा रहा हूँ...जब भी समय मिलेगा, मैं वापस आ जाऊँगा।
सुकन्या को वहाँ आते और अभिवादन करते देख कर आर्य को आश्चर्य होता है।
सुकन्या, मैं तैयार हूँ। शान्तिपुर के लिए अब प्रस्थान करें।
राजकुमार! मैं मन्दिर से चढ़ावा लाई हूँ।

सुकन्या आर्य के ललाट पर तिलक लगाती है।
हाँ, हम शीघ्र ही वहाँ जायेंगे।
कृपया इस माला को पहन लीजिए, राजकुमार। यह देवी का आशीर्वाद है।
धन्यवाद तुम्हें, सुकन्या
सुकन्या अपनी पालकी में बैठ जाती है। आर्य को दूसरी पालकी में बैठाया जाता है।
आर्य की पालकी दूसरी पालकी से आगे कर दी जाती है।
जुलूस शीघ्र ही महल के निकट पहुँच जाता है।
(क्रमशः)

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

मानव शरीर का सबसे बड़ा अंग

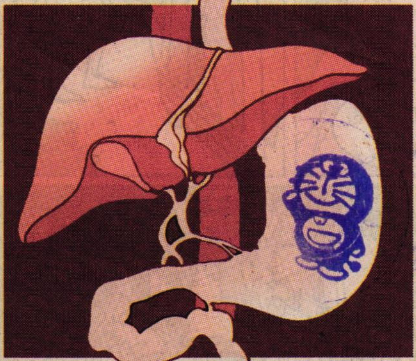

मनुष्य का जिगर शरीर में सबसे बड़ा ग्रन्थिल अंग है। प्रायः इसे मानव शरीर का रासायनिक कारखाना कहा जाता है। यह पेट के कोटर में दाईं ओर मध्य पट के नीचे स्थित रहता है। नीचे की पसलियाँ क्षति से इसकी रक्षा करती हैं।

बाहर से ज़िगर को महसूस करना सम्भव नहीं है। लेकिन जब यह रोग के कारण बड़ा हो जाता है, तब उदर के अन्दर धँस जाने के कारण पसलियों के पीछे से इसे महसूस किया जा सकता है।

जिगर के दो प्राथमिक कार्य हैं, एक, नये रसायनों का समन्वय और दूसरा विष का निष्प्रभावन। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि यह वास्तव में ५०० भिन्न-भिन्न कार्य करता है। जिगर के कुछ कार्य हैं– चरबी को चूर-चूर करना और शर्करा को ग्लाइकोजेन में रूपान्तरण। जिगर कोलेस्टेरोल भी पैदा करता है।

तुम्हारा प्रतिवेश

बीज का मनका

स्मरणातीत काल से ही मनकों ने मानव को मोहित कर रखा है। उसने इसका प्रयोग गहने बनाने, अलंकरण करने तथा सौन्दर्य बोध को प्रभावित करनेवाले अनेक वस्तुओं के निर्माण में किया है। सामान्यतः मनके पत्थर, शीशे या प्लास्टिक से बनाये जाते हैं। जो भी हो, क्या तुमने ऐसा मनका देखा है जो पौधे के बीज से बनाया जाता है ? पौधे का नाम है जॉब्स टियर्स। इसका नाम बाइबिल के एक पात्र जॉब से लिया गया है जिसने, ऐसा माना जाता है, बहुत आँसू बहाये हैं। लेकिन कैथोलिक जपमाला बनानेवाले अक्सर उसे मेरीज़ टियर्स के नाम से सम्बोधित करते हैं।

इस पौधे के बीज चमकदार होते हैं और इसके दोनों ओर छिद्र होते हैं। इनकी आकृति आँसू की बून्दों की तरह होती है। संक्षेप में, मनके के सभी गुण इनमें पाये जाते हैं।

यह पौधा मार्ग के किनारे उगता है। यह देखने में घास-फूस की तरह लगता है। इसके बीज का स्वाभाविक रंग मोती की तरह श्वेत होता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

एक और मच्छड़-मार

किसी को नींद से जगाने के अलग-अलग तरीके हैं। पहला और अधिक सुखद तरीका है जब खिड़की के बाहर पक्षी चहचहाने लगते हैं। दूसरा और अधिक परेशान करने वाला तरीका है जब मच्छड़ तुम्हारे कान के पास भिनभिनाने लगते हैं और जब उस रक्तचूषक के पीड़ादायक डंक से ज़ोर से खुजली महसूस होने लगती है। बाजार में मच्छड़ों को भगाने के अनेक साधन उपलब्ध हैं।

आई.आई.टी., दिल्ली के शोध वैज्ञानिकों ने एक अनोखा घोल तैयार किया है। उन्होंने पता लगाया है कि पेपरमिंट के पौधे का अर्क, पेपरमिंट तेल मच्छड़ों को दूर रखने का बहुत प्रभावशाली उपाय है। यह एनोफिल मच्छड़ों पर भी उतना ही प्रभावकारी है। इसलिए यह मलेरिया को भी रोकने की सम्भावित शक्ति रखता है।

अपने भारत को जानो

दिसम्बर महीने को संगीतमय बनायें!

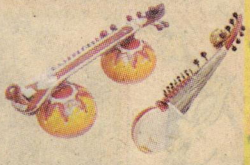

१.दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत को कर्नाटक संगीत का नाम किसने और कब दिया?

२. सम्राट अकबर के शासन में दरबारी संगीतज्ञ कौन था? संगीत की किस शैली को उसने लोकप्रिय बनाया?

३. कर्नाटक संगीत के त्रयी (तीन महान) कौन-कौन माने जाते हैं?

४. भारत में गज़ल गायन को मुस्लिम शासकों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। उसका उद्‌गम कहाँ से हुआ? एक प्रसिद्ध महिला गज़ल गायक का नाम बताओ।

५. तमिलनाडु में शिव की स्तुति में गाये जानेवाले अर्ध-शास्त्रीय भक्ति गीतों का नाम क्या है?

(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

NARAYANAMURTHY TATA

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

विजयी प्रविष्टि

हँस अग्रवाल
श्री ट्रेडर्स, ददुवा बाजार,
बड़गाँव, गोण्डा (उ.प्र.)
पिन-२७१ ००२.

साँप पकड़ कर बना मदारी।
सींगों वाली गुड़िया न्यारी॥

'अपने भारत को जानो' प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

१. विद्यारण्य, जो १५ वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य का मुख्य मंत्री था।

२. तानसेनः ध्रुपद।

३. त्यागराज, श्याम शास्त्री, मुत्तुस्वामी दीक्षीतर।

४. फारस (अब ईरान); बेगम अख्तर।

५. तेवारम।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

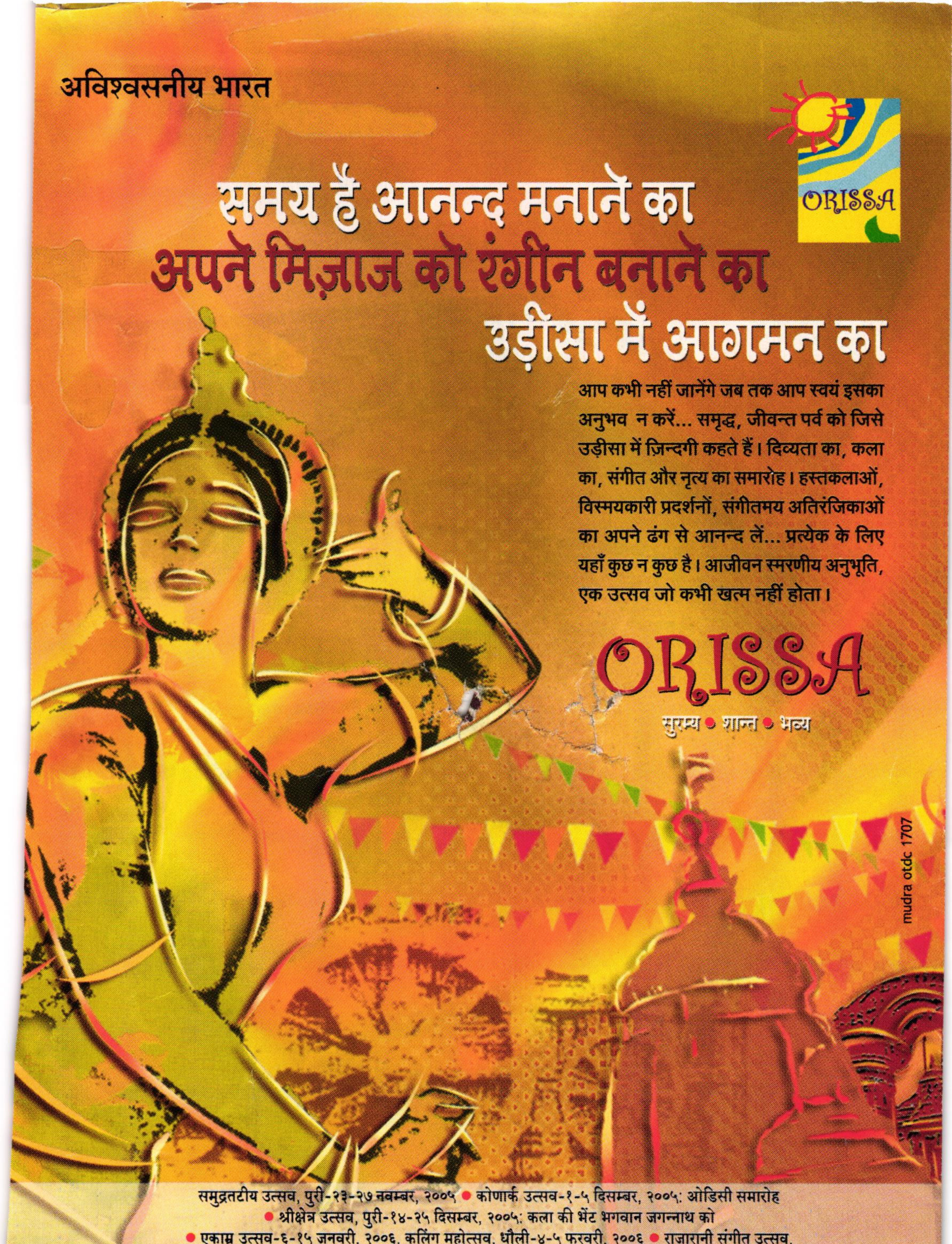

Contact: (0674) 2432177, e-mail: ortour@orissatourism.gov.in, website:www.orissatourism.gov.in
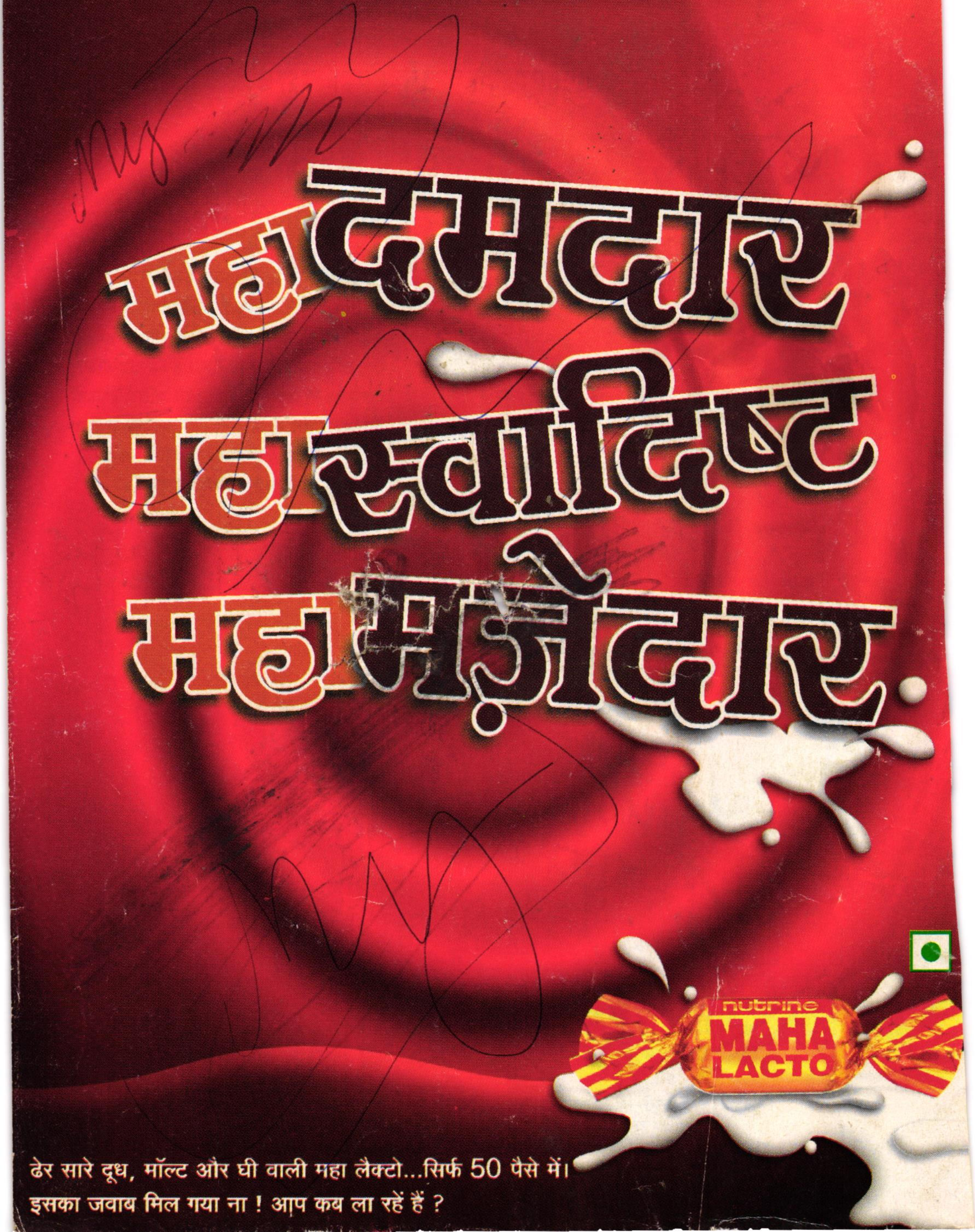
CHANDAMAMA (Hindi) DECEMBER 2005
Regd No. TN/PMG(CCR)-594/03-05
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Licensed to post without prepayment No. 381/03-05 Foreign - WPP. No. 382/03-05